मानव जीवन विकास समिति

वार्षिक प्रतिवेदन

वर्ष 2020-2021

पता– ग्राम बिजौरी, पोस्ट मझगवॉ (बरही रोड) जिला कटनी (म.प्र.)

पिन कोड – 483501

फोन नं. – 07626–275223, 275232, 9425157561

www.mjvs.org

mjvskatni@gmail.com

Celebrating 20 years

अनुक्रमणिका

क्रं.	विषय / गतिविधियां	पृष्ठ सं.
1	**दो शब्द, आभार ।**	03
2	**प्रस्तावना** (परिचय, विजन, मिशन, ट्रेनिंग सेंटर) ।	04
3	**समिति के 10 स्तम्भ ।**	05
4	**समिति के उद्धेश्य, कार्यक्रमों की उम्मीदें, रणनीति ।**	06
5	**समिति का कार्यक्षेत्र**	07
6	**गतिविधियां** – भूमि सम्बंधी कार्य। – जैविक खेती को बढ़ावा । – भूमि और जल प्रबंधन । – प्राकृतिक संसाधन का प्रबंधन / आपदा प्रबंधन । – जड़ीबूटी संग्रह एवं सम्वर्धन / पर्यावरण संरक्षण एवं सम्वर्धन। – स्वास्थ्य, स्वच्छता व कचरा प्रबंधन / स्थानीय कला का विकास। – ग्रामीण अर्थव्यवस्था । – आजीविका कार्यक्रम ।	08 09 10 11 12 13 14 15
7	**स्टोरी** – बकरीपालन बना सहारा, – श्री विधि से खेती लाभदायक, – मुर्गीालन से आजीविका	16 17 18
8	**सामाजिक सुरक्षा के लिए जागरूकता और पहुंच बनाना ।**	19
9	**संवाद**	20
10	**ग्रामीण पर्यटन (तमादी / गरीमा इंडिया) ।**	21
11	**आर्थिक प्रोत्साहन**	22
12	**इन्टर्नशिप (अजीम प्रेमजी युनिवर्सिटी छात्र)।** **स्कालरशिप सपोर्ट ।**	23
13	**नवाचार** – बीज बैंक की स्थापना, – सूचना केन्द्र की स्थापना, – एन.पी.एम. आधारित खेती, – प्रवासी मजदूर पंजी संधारण, – ग्रामसभा मोबलाईजेशन – पोषण जागरूकता कार्यक्रम, – जल संरक्षण के लिए तालाब निर्माण । – कोविड–19 राहत कार्य । – अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस कार्यक्रम ।	24–26
14	**समिति की 20 वर्षीय वर्षगाठ ।**	27
15	**शुभकामना संदेश ।**	28
16	**उपलब्धियां ।**	30
17	**प्रभाव / भावी योजनाएं ।**	31
18	**फोटो**	32–34
19	**मीडिया कवरेज**	35–37
20	**समिति के पदाधिकारी**	38
21	**टीम मेम्बर्स**	39
22	**धन्यवाद्!**	40

Celebrating 20 years

दो शब्द .....

गांव के छोटे किसान, दलित तथा आदिवासियों के सामाजिक, आर्थिक, नैतिक तथा राजनीतिक विकास की दृष्टि से मानव जीवन विकास समिति नामक सामाजिक संस्था का वर्ष 2000 में गठन किया गया। विगत बीस वर्षों में संस्था ने अपने उद्धेश्यों को प्राप्त करने मे सराहनीय कार्य किया है। समाज में वंचितों तथा किसानों में आत्मविश्वास के साथ–साथ क्षमतावृद्धि भी हुई है। आम आदमी को हाशिये से निकालकर मुख्यधारा में जोड़ने के लिए संस्था ने अनवरत प्रयास किया है। मध्यप्रदेश के महाकौशल, बुन्देलखण्ड और बघेलखण्ड के बैगा, गोंड़, कोल, जनजाति के लोगों ने तथा दलितों और किसानों ने संस्था के प्रशिक्षण केन्द्र से सामुदायिक नेतृत्व का प्रशिक्षण प्राप्त कर परम्परागत खेती के कौशल का विकास किया है।

निर्भय भाई के नेतृत्व में नौजवान कार्यकर्त्ता साथियों ने अथक परिश्रम किया है जिसके कारण संस्था अपनी स्थापना के समय से निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर हो रही है। संस्था के सम्मानित सदस्यों, तथा कटनी शहर के पत्रकार, बुद्धिजीवियों एवं समाजिक कार्यो से जुड़े लोगों ने अपने महत्वपूर्ण सुझावों तथा निर्देशों से संस्था को आगे बढ़ाने में भरपूर सहयोग दिया है जिसके लिए मैं उनका ह्दय से धन्यवाद करता हूँ।

बद्री नारायण नरडिया
अध्यक्ष

आभार .....

समिति का रजिस्ट्रेशन होने के बाद अपने सीमित संसाधनों के साथ केन्द्र के आसपास के गांवों मे जनजागरण व संगठनात्मक कार्य प्रारम्भ किया परन्तु इस कार्यकाल के दौरान ग्रामीण विकास प्रतिष्ठान के सहयोग से सतना, डिण्डौरी काकेर जिले के 5–5 गांवों मे वैकल्पिक कृषि व नर्सरी वृक्षारोपण आदि कार्यो को बढ़ावा देने लायक काम करते–करते समिति ने अपने काम को कटनी जिले में केन्द्रित करते हुए वर्तमान में महाकौशल क्षेत्र को अपना कार्यक्षेत्र बनाया जिसमें वर्तमान में कटनी डिण्डौरी मण्डला व बालाघाट जिले में सघन रुप से काम कर रही है।

मुझे आज खुशी हो रही है कि समिति अपने बीस वर्षों के कार्य को अंजाम देते हुए इस मुकाम में पहुंची है कि जो रिपोर्ट आपके हाथ में है उन सभी कार्यो में समिति से जुड़े एक–एक कार्यकर्ता समिति के सम्मानीय सदस्य गणों का भरपूर सहयोग प्राप्त रहा है। मानव जीवन विकास समिति के इस केन्द्र को दुनिया के कई देशों के व्यक्तियों तक अपनी पहचान बनाई है, इस समस्त विरादरी एवं टायपिंग कार्य में राम किशोर चौधरी तथा हिसाब किताब कार्य में अभय कुमार पटेल और ट्रेनिंग सेंटर व कृषि कार्य मे लगे दयाशंकर यादव तथा इसके अलावा अलग अलग प्रोजेक्टो मे काम कर रहे सभी साथीगण का कोटी–कोटी धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ ।

निर्भय सिंह
सचिव

मानव जीवन विकास समिति

परिचय :– मानव जीवन विकास समिति एक सामाजिक गैर–सरकारी संगठन है, जिसका गठन वर्ष 2000 में किया गया था। **विगत 20 वर्षो में संस्था ने अपने उद्धेश्यों के प्रति सजग रहते हुए सराहनीय कार्य किया है** और आगे निरन्तर ग्रामीण क्षेत्रों में काम कर रही है। समिति के ऑफिस स्टॉफ से लेकर फील्ड कार्यकर्ताओं की क्षमतावृद्धि के साथ ग्रामीण क्षेत्रों में वंचित समुदाय के साथ उनके क्षमतावर्धन हेतु प्रशिक्षणों का आयोजन करना व लोगों की स्थायी आजीविका की ओर अग्रसर हो रही है, आम आदमी को मुख्यधारा में जोडने के लिये संस्था ने अनवरत् प्रयास किया है। **समिति शिक्षा, स्वास्थ, पर्यावरण सुरक्षा, आजीविका आदि** पर भी काम कर रही है। मध्यप्रदेश के महाकौशल, बुन्देलखण्ड, बघेलखण्ड, केरल, राजस्थान क्षेत्र के 15 जिले के 24 ब्लॉक के 463 गॉवों में सघन रूप से काम को बढा रही है, समिति के संस्थापक गॉधीवादी विचारक डॉ. राजगोपाल पी.व्ही. जी के निर्देशन में समिति के निम्न दस स्तम्भों पर विचार–विमर्श कर अपने काम को आगे बढाने में निरन्तर सक्रिय है जबकि समिति कटनी जिले के बड़वारा तहसील के अन्तर्गत बिजौरी गांव में अपने 30 एकड के क्षेत्र में प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना कर जड़ीबूटी संग्रह व संवर्धन, वृक्षारोपण व जैविक खेती को बढ़ावा देते हुए किसानों को प्रशिक्षण देने का भी कार्य कर रही है। समिति का मानना है कि वंचितों और किसानों के जीवन को बेहतर बनाने में सशक्त भूमिका निभाएगी जिससे भूखमुक्त और भयमुक्त समाज की रचना का सपना साकार होगा।

विजन (दृष्टि) – हमारी दृष्टि एक गरिमामयी जीवन जीने के प्राकृतिक संसाधनों का प्रबंधन के लिए समुदाय की क्षमता को बढ़ाकर एक सामाजिक रूप से समावेशी समाज का निर्माण करना।

मिशन (लक्ष्य) – हमारा लक्ष्य जैविक खेती के माध्यम से एक वैकल्पिक आर्थिक मॉडल के रूप मे अहिंसक अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देना, प्राकृतिक संसाधनों के इष्टतम प्रबंधन के लिए गरीबी उन्मूलन और सामुदायिक आत्मनिर्भरता की ओर नेतृत्व करना।

ट्रेनिंग सेन्टर :– संस्था के पास 30 एकड़ भूमि है। इसी भूमि पर संस्था का कार्यालय 2 कमरों पर है, 2 प्रशिक्षण हाल है जिसमे लगभग 200 लोगों को बैठाकर व 100 लोगों को कुर्सी मे बैठकर प्रशिक्षण दिया जा सकता है, एक छोटा प्रशिक्षण हाल है जिसमे 50 लोगों को कुर्सी मे बैठाकर प्रशिक्षण दिया सकता है, गेस्ट रूम है जिसमे 4 कमरे अटैच है, आवासीय भवन 3 बड़े हाल डोरमेट्री है जिसमे 100 लोगों को रूकाया जा सकता है एवं 5 छोटे कमरे जिसमे 50 लोगों को रूकाया जा सकता है, किचिन के बाजू से टीन सेड बना है जिसमे 100 से 150 लोगों को बैठाकर भोजन कराया जा सकता है तथा रसोई कक्ष भी उपलब्ध है, स्टॉफ रूम तथा महिला रूम अलग से है, एक पुस्तकालय है।

समिति के 10 स्तम्भ

हमारा आर्थिक | हमारी राजनीति | हमारी शिक्षा | हमारा समाज | हमारी संस्कृति | हमारी कृषि | हमारा सशक्तीकरण | हमारा परिवेश | हमारा सहयोग | हमारी संस्था

- **हमारा आर्थिक–** परावलम्बी समाज से स्वावलम्बी समाज निर्माण के सिद्धान्त पर चलते हुए प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन पर आधारित अहिंसक समाज रचना में लगे समुदाय का निर्माण करना ताकि भूखमुक्त समाज की रचना हो सके।
- **हमारी राजनीतिक** – लोक आधारित लोक उम्मीदबार के सिद्धान्त पर लोकनीति के अनुसार चलने के लिए लोगों को खड़ा करना ताकि सही अर्थो में लोकतंत्र की स्थापना की जा सके।
- **हमारी शिक्षा** – समग्र विकास पर आधारित ज्ञान का प्रचार प्रसार एवं स्कूली बच्चों के सर्वांगीण विकास के साथ–साथ रोजगारोन्मुखी शिक्षा देना ताकि बेरोजगारी की समस्या का उन्हे सामना न करना पड़े।
- **हमारा समाज–** अखण्डता, सम्प्रभुता, सम्भाव, परस्पर भाईचारे के साथ–साथ एकता, समानता, सामूहिकता एवं न्याय पर आधारित समाज जिसमें ऊंच–नीच, अगले–पिछड़े जाति आधारित भेदभाव न हो।
- **हमारी संस्कृति** – स्थानीय लोक कला एवं संस्कृति के कलाकारों को संगठित कर पुनर्जीवित करना उनका संवर्धन एवं संरक्षण कर वातावरण उपलब्ध करवाना।
- **हमारी कृषि–** लम्बे समय तक भूमि की उत्पादन क्षमता बनाये रखने वाली जैविक खेती को प्रोत्साहन देकर पारम्परिक ढ़ग से खेती कर रहे किसानों का उत्साह बढ़ाना ताकि वे कृषि की नीति का विकास कर सके।
- **हमारा सशक्तीकरण** – गरीबी झेल रहे दीन दुःखी जो अपाहिजों जैसा जीवन जीने के लिऐ विवश हैं। समाज में विद्यमान ऐसे स्त्री पुरूषों के प्रति असमानता और उपेक्षा को दूर कर समानता का दर्जा दिलवा कर शोषण, अत्याचार एवं भ्रष्टाचार से मुक्त सशक्त सामाजिक ढ़ांचे का निर्माण करना।
- **हमारा परिवेश** – स्वच्छ व स्वस्थ वातावरण का निर्माण करना जहाँ हिंसा, लूटपाट, वैमनस्यता, दुराचार तथा तेरे मेरे लिए कोई स्थान न हो।
- **हमारा सहयोग एवं मित्रता** – परस्पर सहयोग की भावना को पुनर्जीवित कर एक दूसरे की सहायता व मित्रता को बढ़ावा देना ताकि पूरा गांव और समाज अपनी समस्याऐं आपसी सहयोग व मित्रता के आधार पर सुलझा सकें।
- **हमारी संस्था** – उपरोक्त विचारों के क्रियान्वयन के लिऐ तथा समाज कल्याण के काम का विकास करने में संस्था एक मजबूत आधार स्तम्भ है।

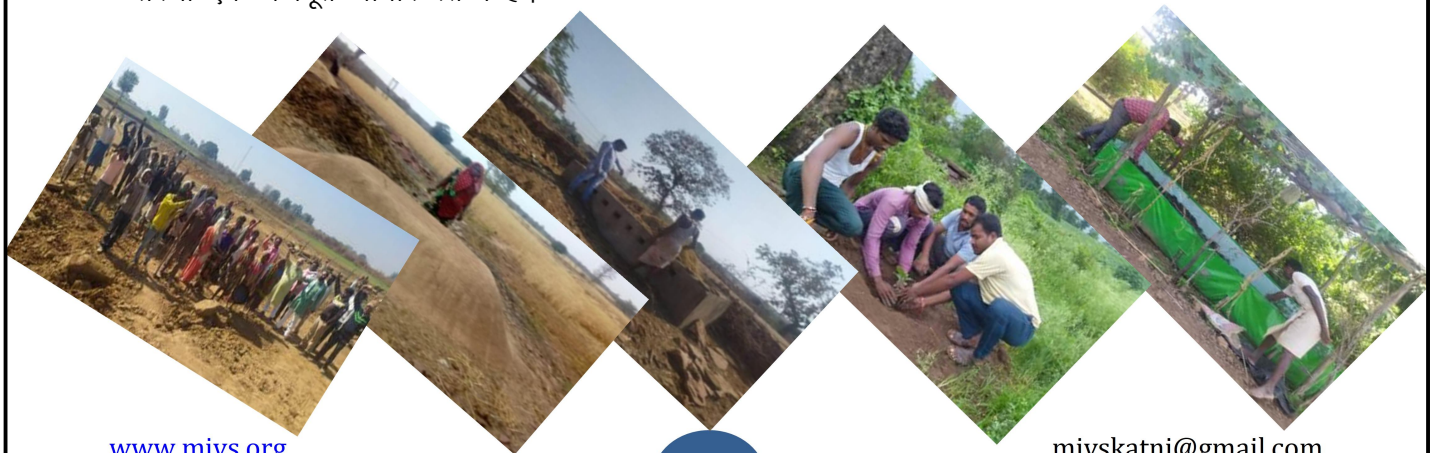

Celebrating 20 years

उद्धेश्य : समिति का उद्धेश्य है –

- विज्ञान, शिक्षा, साहित्य तथा ललित कलाओं का विकास करना।
- पर्यावरण को स्वस्थ एवं प्रदूषण मुक्त करने के प्रयासों को बढ़ावा देना।
- वनवासियों की आजीविका, समृद्धि एवं सम्मान की रक्षा के लिए प्रयास करना।
- बच्चों के सर्वांगीण विकास के अनुरूप परिवेश की रचना के लिए प्रयास करना।
- सामाजिक कल्याण तथा अन्याय एवं शोषण के विरूद्ध लोक चेतना जागृत करना।
- जैविक कृषि पद्धति का क्षेत्र मे प्रचार–प्रसार करना ताकि कृषि उत्पादकता मे वृद्धि हो।
- खेती को लाभ का धन्धा बनाने के लिए जैविक तरीके को अपनाना व वृक्षारोपण को बढ़ावा देना।
- विस्थापितों को न्यायपूर्ण अधिकार दिलाने के मार्ग को प्रशस्त करना।
- महिलाओं को सम्मान तथा अधिकार दिलाने के लिए शिक्षा, ज्ञान विज्ञान का प्रचार–प्रसार करना।
- वनवासियों को वन/वनोपज पर उचित अधिकार दिलवाना एवं रचनात्मक कार्य करना।

कार्यक्रमों की उम्मीदें : समिति का कार्यक्रमों से उम्मीद है –

- पर्यावरण सुरक्षा एवं किसानों को जैविक खेती करने बढ़ावा।
- हिंसा मुक्त समाज का निर्माण तथा नशामुक्ति के खिलाफ माहौल निर्माण।
- शासकीय योजनाओं की जानकारी व क्रियान्वयन व युवाओं मे जागरूकता।
- शिक्षा स्तर तथा स्वावलम्बन प्रक्रिया मे बढ़ावा एवं आदिवासी क्षेत्रों मे जागरण का संकेत।
- जल स्तर मे बढ़ावा एवं सुधार हेतु तालाब, डेम, चैक डेम व छोटे छोटे कन्टूर का निर्माण।
- गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों को बढ़ावा मिलेगा तथा स्वरोजगार स्थापित होंगे, पलायन रूकेगा।
- जल, जंगल और जमीन सुरक्षित होगी तथा लोगों की स्थायी आजीविका का मॉडल निर्माण।
- पंचायतीराज की समझ का विकास तथा महिलाओं मे सशक्तिकरण व क्षमतावर्द्धन का विकास।

रणनीति :– उद्धेश्यों की पूर्ति करने मे निम्न रणनीति का उपयोग हो रहा है।

- मूलभूत सुविधाओं जैसे पेय जल, आवास, बिजली, शिक्षा पर बल देना।
- एफ.आर.ए. के तहत लोगों को वन भूमि मे काबिजों का अधिकार पत्र व कब्जा दिलाना।
- सामाजिक कुरीतियों को समझाने लोकगीत, नाटक प्रदर्शन आदि के माध्यमों से समझाना।
- पंचायत जनप्रतिनिधियों व जागरूक मंच का अधिकारों के प्रति निरन्तर क्षमतावर्द्धन करना।
- मीडिया व अधिकारियों के साथ संवाद करना ताकि जानकारी का अदान–प्रदान होता रहे।
- जन जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन, बैठक व छोटे छोटे नुक्कड़ सभाऐं आयोजित करना।
- कार्यकर्ताओं द्वारा गांव गांव मे संगठन एवं स्वसहायता समूहों का निर्माण करना एवं संचालन।
- योजनाओं का विकेन्द्रीकरण मे मदद एवं शासकीय विभागों से तालमेल बैठाना व काम कराना।
- स्कूलों मे वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन कर बच्चों मे शिक्षा के प्रति जागरूकता लाना।

भौगोलिक कार्यक्षेत्र

क्रं.	जिला	ब्लॉक	गॉव
1	कटनी	बडवारा	121
2	बालाघाट	बैहर	22
3	उमरिया	मानपुर	5
4	सिहोर	बुधनी	10
5	राजस्थान 3 जिले (जोधपुर, उदयपुर, जयपुर)	3 ब्लॉक	10
6	केरल 4 जिले (कानपुर, कोजीकोड, वायनाड, अलप्पुझा)	4 ब्लॉक	15
7	दमोह	तेन्दूखेडा	60
8	डिण्डौरी	5 ब्लॉक	100
9	मण्डला	6 ब्लॉक	100
10	पन्ना (पार्टनरशिप)	शाहनगर	20
कुल	15	24	463

Celebrating 20 years

गतिविधियां

भूमि अधिकार अधिनियम	जैविक कृषि को बढ़ावा	भूमि व जल प्रबंधन	प्राकृतिक संसाधन का प्रबंधन	आपदा प्रबंधन	जड़ी बूटी सग्रह एवं संवर्धन	पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन	स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं कचरा प्रबंधन	स्थानीय कला का विकास	ग्रामीण अर्थ–व्यवस्था	आजीविक कार्यक्रम

समिति की विभिन्न गतिविधियों मे से मुख्य गतिविधि है आजीविका कार्यक्रम, भूमि व जल प्रबंधन, प्राकृतिक संसाधनों का प्रबंधन, स्वास्थ्य व स्वच्छता एवं कचरा प्रबंधन, आपदा प्रबंधन, स्थानीय कला का विकास, पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन, जड़ी बूटी, सग्रह एवं संवर्धन, नाडेप भू–नाडेप, जैविक कृषि को बढ़ावा, वन अधिकार अधिनियम के तहत काबिजों को अधिकार दिलाना आदि गतिविधियां समिति गंभीरता से संचालन कर रही है।

भूमि अधिकार

भूमि अधिकार

भूमि सम्बंधी कार्य

- वन अधिकार कानून की जानकारी व जागरूकता
- वन एप मित्र पोर्टल मे आवेदन कराना एवं फॉलोअप करना।
- दावा आपत्ति का फार्म भरवाना एवं फॉलोअप करना।
- वन अधिकार पत्र दिलाने मे मदद करना।
- वन अधिकार के तहत पट्टा दिलाने मे मदद करना।

वन अधिकार कानून 2006 के प्रति लोगों को बैठक व शिविर के माध्यम से जागरूक करना।	1188
वन अधिकार कानून 2006 के तहत लोगों के आवेदन दिलाये गये।	4249
वन एप मित्र के माध्यम से लोगों के आवेदन भरवाये गये।	850
वन अधिकार के तहत वन मित्र के से प्राप्त आवेदनों के माध्यम से लोगों को प्राप्त पट्टे की संख्या।	263

जैविक खेती को बढ़ावा

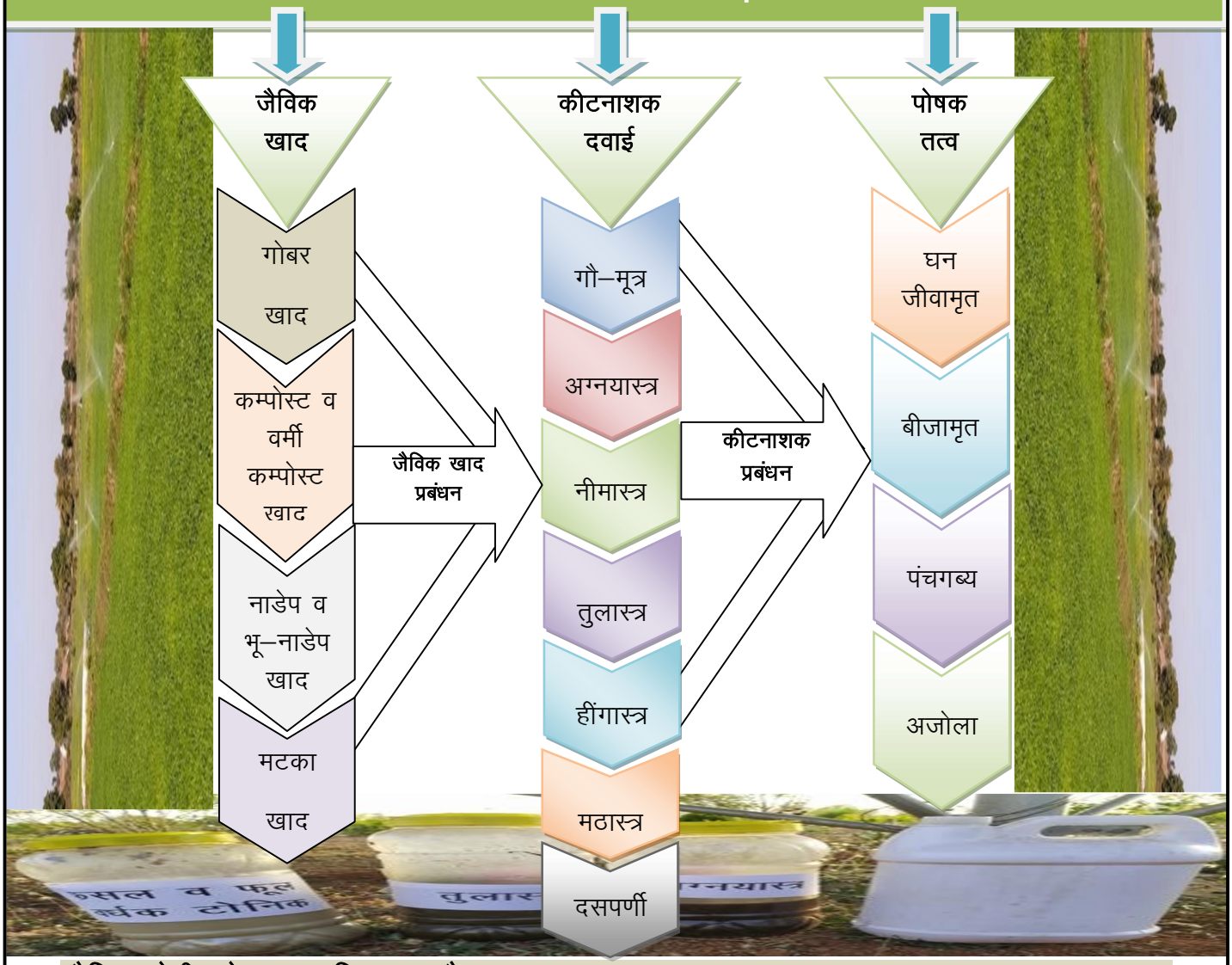

जैविक खेती को बढ़ावा मिल रहा है –

जैविक खेती को बढ़ावा बहुत जरूरी हो गया है क्योंकि जिस प्रकार से भूमि से पेड़ काटने से भूमि का दोहन हुआ है उसी प्रकार से किसान खेती की फसल मे रासायनिक खाद के प्रयोग से भूमि को ही नही फसल को भी हानि पहुंचाया है। इसका नतीजा यह भी देखने को मिल रहा है कि रासायनिक खाद का तत्व अनाज मे मिलने से लोगों मे रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो गई है, इससे नई नई बीमारियां भी पनप रही है। इन सभी समस्याओं से निपटारा पाना है तो सभी को जैविक तरीके की खेती को अपनाना होगा। समिति अपने तरीके से कार्यक्षेत्र के गांव मे कार्यकर्ताओं की मदद से किसानो को जैविक खेती करने प्रोत्साहित कर रही है। खेती मे गोबर खाद, केचुआ खाद, कम्पोस्ट खाद, वर्मीकम्पोस्ट खाद के अलावा कीटनाशक की जगह गौ–मूत्र, नीम अस्त्र, घन जीवामृत, बीजामृत, मटका खाद, पंचगब्य का उपयोग करना बताते और सिखाते है। पौधो को पोषक तत्व प्रदान करने के लिए अलग अलग फसलों के लिए अलग अलग पोषक तत्व की आवश्यकता होती है जिसे जैविक तरीके से निर्माण कर किसान उपयोग कर रहे है जैसे राइजोबियम, ऐजेक्टोबेक्टर, ट्राइकोडरमा का उपयोग करते है। जैविक कीट नियंत्रण मे अग्नयास्त्र, नीमास्त्र, तुलसस्त्र, हींगास्त्र, लमित, मठास्त्र आदि का प्रयोग कर जैविक खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है। इससे उत्पादकता मे लगातार वृद्धि हो रही है।

भूमि और जल प्रबंधन :

भूमि प्रबंधन और जल प्रबंधन बहुत जरूरी है इसके बिना खेती संभव नही है। कृषि योग्य भूमि मे जैविक खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है। वर्तमान मे देखा जाये तो अधिकांश मात्रा मे भूमि का दोहन हो रहा है, भूमि पर से पेड़ो को लगाने की बजाय काटा जा रहा है। पेड़ कटने से बारिस का पानी तेजी से गिरने के कारण मिट्टी का कटाव ज्यादा होता है जिससे भूमि की उर्वरता नष्ट होती है। बारिस का पानी रोकने के लिए मेढ़बंदी, तालाब, डेम, चैक डेम, कंटूर निर्माण, वृक्षरोपण कराकर मिट्टी के कटाव को रोका जा रहा है। समिति अपने कार्यकर्ताओं की मदद से फील्ड मे गांव गांव जाकर किसानों के भूमि मे बरसात के मौसम मे अधिक से अधिक वृक्षारोपण करा रही है।

भूमि और जल प्रबंधन

भूमि समतलीकरण

भूमि प्रबंधन की बात करें तो सबसे पहले भूमि समतलीकरण आता है। ऊबड़ खाबड़ व बंजर भूमि को समतल बनाकर कृषि योग्य भूमि बनाना जिससे कृषि कार्य किया जा सके। किसानों को जानकारी देते हुए भूमि प्रबंधन की ओर मोड़ा जाता है जिससे अनुपयोगी भूमि को कृषि भूमि मे परिवर्तित कर अच्छी उपज प्राप्त करते है। **(509 परिवार के खेत मे समतलीकरण)**

मेढ़बंधान

भूमि का मिट्टी कटाव रोकने के लिए मेढ़बंधान व भूमि को छोटे छोटे हिस्से मे बांटकर पानी को रोकने का काम कर रहे है। इससे देखा गया की भूमि की उर्वरता क्षमता अच्छी बढ़ी है मिट्टी का कटाव भी रूका है। मेढ़ मे पौधारोपण है जिससे मेढ़ मजबूती से पानी को रोके रखे जिससे भूमि संरक्षण हो जाता है। **(215 परिवार मे हुआ)**

कंटूर निर्माण

कंटूर निर्माण से तात्पर्य है छोटे छोटे जलसंरचना का निर्माण करना ताकि बारिस का पानी कंटूर या गड्ढ़े मे रूकेगा। इससे खेतों को पानी तो मिलेगा साथ ही साथ जल स्त्रोत भी बढ़ेगा जिससे किसान को अपनी फसल मे पानी से राहत मिलेगा। **(350 परिवार के खेत मे कराया गया है)**।

बोरी बंधान

गर्मी के दिनों मे नदि, नाले का पानी कम होने से काफी जगह सूख सी जाती है ऐसी स्थिति मे नदि, नाले को बीच बीच मे बोरी बंधान कर पानी को रोक लिया जाता है जिससे सिंचाई व पशुओं को पीने की समस्या नही होती है। इसके साथ खेती भी आसानी से किसान कर पाते है। **(113 सूखे नाले को जीवित किया गया)।**

तालाब निर्माण

वन अधिकार अधिनियम के तहत प्राप्त पट्टे की जमीन को विस्तार करने के लिए व उसी जमीन से स्थायी आजीविका सुनिश्चित करने के उद्धेश्य से किसान के खेत मे तालाब निर्माण कराया गया। यह बताते हुऐ हर्ष हो रहा है कि इस तालाब से किसानों को पिछले साल की अपेक्षा इस साल फसल आमदनी मे दोगुनी वृद्धि हुई है। अब किसान को अपने खेत मे पर्याप्त फसल का उत्पादन होने से उसे पलायन करने की समस्या अब नही है। **(274 तालाब निर्माण कराया गया ताकि किसानों के खेत मे पानी की समस्या न हो)।**

डेम निर्माण

चैकडैम जमीन के नीचे जल स्तर बढ़ाने के लिए सूखी धरती को हरा भरा करने के लिए चेकडैम सबसे सस्ता तरीका है। यह मिट्टी, पत्थर या सीमेंट–रोड़ी का बना हुआ होता है, इसे किसी भी झरने या नाले के जल प्रवाह की आड़ी दिशा मे खड़ा किया जाता है इसमे भूजल का स्तर बढ़ता है। यह एकत्रित किया हुआ जल किसानों के फसल सिंचाई मे मदद करता है जिससे फसल उत्पादन मे बढ़ोत्तरी होती है। **(48 डेम बनवाये गये है)।**

कुंआ निर्माण

जिस किसान के खेत मे पानी की समस्या हो रही होती है तो वर्षा का पानी नही मिलने से फसल नष्ट हो जाती थी। खेत मे कुंआ बनाने से अनाज उत्पादन मे मदद मिलेगी। कुंआ बनने पर किसान की फसल उत्पादन मे वृद्धि हुई है। जहां कही भी नदि, नाले, तालाब, बोरबेल्स की सुविधा नही मिल पाती थी वहां पर किसान अपने श्रम से कूंआ निर्माण कर खेतों को हरा भरा कर दिया **(160 कूंआ निर्माण कराया गया जिससे किसानों के खेत मे पानी है)**

Celebrating 20 years

प्राकृतिक संसाधन का प्रबंधन:- वे संसाधन जो उपयोगी हो या फिर मनुष्य को अपनी जरूरतों को पूरी करने हेतु उपयोगी बनाये जा सकते हैं। संसाधन के परोक्ष रूप से उपयोग करने हेतु, उपलब्ध हो, प्राकृतिक संसाधन हैं। प्राकृतिक संसाधनों के उदाहरण, शुद्ध हवा, शुद्ध पानी, मृदा, वन, खनिज, वर्षा, झीलों, नदियों और कुओं द्वारा मृदा, भूमि, वन, जैवविविधता, खनिज, जीवाश्मीय ईंधन इत्यादि शामिल हैं। इस प्रकार प्राकृतिक संसाधन हमें पर्यावरण से प्राप्त होते हैं। बढ़ती जनसंख्या और आर्थिक प्रक्रियाओं के चलते अत्यधिक मात्रा में पदार्थों का उपयोग करने के कारण प्राकृतिक संसाधनों के आधार पर भारी बोझ पड़ता है और इस कारण पर्यावरण गंभीर रूप से नष्ट होता जा रहा है। प्राकृतिक संसाधन को बनाये रखने के लिए समिति व संगठनकर्ता पर्यावरण के अवसर पर अधिकांश मात्रा मे वृक्षारोपण करते है, वर्षा का जल बेकार न बह जाये इसके लिए छोटे छोटे जल संरचनायें बनाये जा रहे है, जनसंख्या नियंत्रण पर रोक लगाने लोगों को जागरूक किया जा रहा है।

आपदा प्रबंधन:- कोविड–19 आपदा राहत कार्य, सूखा, बाढ़, चक्रवाती तूफानों, भूकम्प, भूस्खलन वनों में लगनेवाली आग, ओलावृष्टि, टिड्डी दल और ज्वालामुखी फटने जैसी विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं का पूर्वानुमान नहीं लगाया जा सकता है, न ही इन्हें रोका जा सकता है, लेकिन इनके प्रभाव को एक सीमा तक जरूर कम किया जा सकता है, जिससे कि जान.माल का कम से कम नुकसान हो। यह कार्य तभी किया जा सकता हैए जब सक्षम रूप से आपदा प्रबंधन का सहयोग मिले। प्रत्येक वर्ष प्राकृतिक आपदाओं से अनेक लोगों की मृत्यु हो जाती है, इससे सर्वाधिक जाने चली जाती है। इसके अतिरिक्त बढ़ती आबादी के प्रभाव क्षेत्र एवं ऐसे खतरों से जुड़े माहौल से संबंधित सूचना और डाटा भी आपदा प्रबंधन का अंग है। इसमें ऐसे निर्णय लिए जा सकते हैं कि निरंतर चलने वाली परियोजनाएं कैसे तैयार की जानी हैं और कहां पर धन का निवेश किया जाना उचित होगा, जिससे दुर्दम्य आपदाओं का सामना किया जा सके।

जड़ीबूटी संग्रह एवं संवर्धन:- जड़ी.बूटी संबंधी सिद्धांत, वनस्पतियों और वनस्पति सारों के उपयोग पर आधारित एक पारंपरिक औषधीय या लोक दवा का अभ्यास है। वनों में पायी जाने वाली जड़ी बूटियां विशेषकर कंद प्रजातियों का संरक्षण एवं संवर्धन करना अति आवश्यक है क्योंकि कंद प्रजातियों के अधिक दोहन से उक्त प्रजातियों के विलुप्त होने संग्रह कर उनका संरक्षण समिति की औषधिय पौधों की रोपणी मे किया गया। समिति के पास स्वयं की नर्सरी है इसमे लगभग 300 प्रजाति की जड़ी बूटी संग्रह कर संरक्षित किया जा रहा है। औषधीय पौधों का उपयोग जरूरतमंद लोगों को निःशुल्क दिया जाता है।

Celebrating 20 years

पर्यावरण संरक्षण एवं संवंर्धनः- पर्यावरण के संरक्षण, संवर्धन और विकास का लिया संकल्प, पर्यावरण संरक्षण के लिए हमें सर्वप्रथम इस धरती को प्रदूषण रहित करना होगा। जनसंख्या वृद्धि के कारण प्रदूषण भी बढ़ता ही जा रहा है, जिसे नियंत्रण में लाना आवश्यक है तभी हमारे पर्यावरण का संरक्षण हो पाएगा। मनुष्य दिन प्रतिदिन प्रगति करता जा रहा है और इस विकास के नाम पर प्रदूषण वृद्धि करता जा रहा है। पर्यावरण अर्थात् जिस वातावरण में हम रहते हैं। हमारे आस पास मौजूद हर एक चीज, जीव.जंतु, पक्षी, पेड़.पौधे, व्यक्ति इत्यादि सभी से मिलकर पर्यावरण की रचना होती है। हमारा इस पर्यावरण से घनिष्ठ संबंध है और हमेशा रहेगा। प्रकृति और पर्यावरण की अद्भुत सुंदरता देखते ही हृदय में खुशी और उत्साह का संचार होने लगता है। **पर्यावरण को शुद्ध बनाये रखने के लिए लोगों को निःशुल्क पौधे वितरण कर घर के आसपास, खेतों व सार्वजनिक जगहों मे पौधा लगवाया जा रहा है।**

स्वास्थ्य प्रबन्धन :– स्वास्थ्य के क्षेत्र मे देखा जाये तो गांव गांव मे समिति कार्यकर्ता आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, सहायिका, आशा कार्यकर्ता, महिला जनप्रतिनिधियों की मदद से कुपोषित बच्चे को पोषण पुनर्वास केन्द्र मे भर्ती कराना और पोषण आहार दिलाना, किशोरी बालिका की समय समय पर जांच व आवश्यक सलाह दी जाती है, गर्भवती व धात्री महिलाओं की जांच व उपचार कराने सलाह दी जाती है एवं गंभीर बीमार व्यक्ति की ईलाज कराने, काम कर रही है।

स्वच्छता व कचरा प्रबंधन :– जरूरी पहलू है, गाँधी जी के दैनिक जीवन में सफाई अति आवश्यक कार्य था, उन्हीं आदर्शो का पालन करते हुए संस्था स्वच्छता एवं कचरा प्रबंधन को प्राथमिकता से काम किया है। गांव की गलियो, वार्डो मे साफ सफाई कर स्वच्छता का परिचय दिया जा रहा है। कचरा इकट्ठे करने एवं कचरे से फायदे व हानि को भी बताया गया। हमारे आसपास अन्यत्र जगह कचरा जमा होने से गंदगी के कारण जहरीले मच्छर पनपते है जिसके काटने से बीमारी होती है, इससे बचने के लिए कचरा को एक निश्चित जगह **कम्पोस्ट व वर्मीकम्पोस्ट और नाडेप व भू–नाडेप** मे डालने से कचरा से खाद बनती है जिसके उपयोग से खेती मे अनाज की पैदावार को बढ़ा सकते है।

स्थानीय कला का विकास:-

स्थानीय कला वास्तव मे विलुप्त होता चला जा रहा है ऐसे मे आने वाले समय मे स्थानीय कला का नामों निशान मिट जायेगा। समिति अपने स्तर पर स्थानीय कलां को बचाये रखने मे मदद कर रही है। जैसे मिट्टी के बर्तन बनाना, बांस के बर्तन बनाना, पत्थर की वस्तु बनाना, लकड़ी की वस्तु बनाना आदि शामिल है। ऐसे कलाकारों को समिति के माध्यम से प्रतिभाशाली कलाकारों का ट्रेनिंग दिया जाता है इनके द्वारा उत्पादित वस्तु का बाजार उपलब्ध कराकर उचित पारिश्रमिक दिलाये जाने कार्य किया जा रहा है।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था (रूरल इकोनॉमी):–प्रदेश व प्रदेश के बाहर जहॉ भी लोग अपने गॉव की अर्थव्यवस्था को ठीक करना चाहते हैं या आगे बढ़ाना चाहते हैं तो उस गॉव में उपलब्ध प्राकृतिक संसाधन, पानी, जमीन और वनोपज का संकलन जैसे कार्यों को प्राथमिकता के साथ करना चाहते हैं उन गॉवों के साथ सामूहिक रूप से बैठकर संगठन के माध्यम से ऐसे कार्यक्रमों को आगे बढाने के लिये कार्यक्रम तय किये जाते हैं जैसे **उमरिया जिले का मरई कला, कटनी जिले का कछारी गांव मे** कई प्रकार के ग्रामीाण अर्थव्यवस्था के तहत काम किये जा रहे हैं, जिसमें जैविक खेती को बढाना, महिलाओं के द्वारा सब्जी उत्पादन को बढाना वनोपज का संकलन एवं मार्केटिंग, सिंचाई सुविधा के साथ खेती में उत्पादन बढाकर अपने भरण पोषण के लिये अनाज उत्पादन करना।

उमरिया जिला अन्तर्गत मानपुर ब्लॉक का मरईकला गांव बाधवगढ़ टाईगर रिजर्व रिसोर्ट से लगा हुआ गांव है। इसके आसपास नदि, नाले होने से पानी का अच्छा स्त्रोत है, यहां की जमीन भी काली, भुरभुरी वाली होने से सभी फसलों के लिए अच्छा उत्पादन देती है। जैविक खाद गोबर, कम्पोस्ट व वर्मीकम्पोस्ट खाद का उपयोग कर जैविक हल्दी का उत्पादन मे वृद्धि के साथ साथ उसकी गुणवत्ता भी अच्छी होती है **जैविक हल्दी** होने के कारण बाजार भाव अच्छा मिलता है इससे किसानों के उत्पादकता मे वृद्धि हुई है। प्रत्येक किसान **50 से 60 हजार रूपये** तक हल्दी से कमाता है। गांव के अन्य किसान भी जैविक हल्दी खेती की ओर अपना रास्ता बदल रहे है। रूरल टूरिज्म को बढ़ावा मिल रहा है।

कटनी जिला अन्तर्गत बड़वारा ब्लॉक का कछारी गांव मे 15 महिलाओं का समूह बना है ये समूह काफी सक्रिय है यह जैविक सब्जी उत्पादन के लिए जाना जाता है। **जैविक सब्जी** का उत्पादन के आधार पर बाजार की उपलब्धता नही होने से उमरिया जिले का बाजार करते है वहां से लगा हुआ कालरी इलाका होने से सब्जी का भाव अच्छा मिल जाता है जिससे अपने लोकल बाजार से **25 से 30 प्रतिशत** अधिक लाभ हो रहा है। प्रतिवर्ष समूह **3 से 4 लाख रूपये** तक सब्जी व्यवसाय से कमाता है। व्यवसाय से प्राप्त आमदनी का कुछ हिस्सा अन्य खेती मे लगाकर आर्थिक स्थिति को मजबूत कर रहे है। कछारी गांव आस पास के गांव के लिए जैविक सब्जी खेती के लिए उदाहरण स्वरूप साबित हुआ है, दूसरे गांव के लोग इसे देखने आते है।

आजीविका कार्यक्रम :– मानव जीवन विकास समिति द्वारा **भारत रूरल लाईवलीहुड फाउण्डेशन** दिल्ली की मदद से दमोह जिले के तेन्दुखेड़ा और पन्ना जिले के शाहनगर ब्लॉक के 80 गांव मे परियोजना आधारित आजीविका कार्यक्रम समिति अपने कार्यकर्ता टीम की मदद से कर रही है। यह कार्यक्रम से लोगों को जोड़कर काम करना होगा ताकि लोगों की मदद से लोगों के लिए काम किया जा सके। साथ लोगों की स्थायी आजीविका सुनिश्चित किया जा सके। गांव के लोगों के पास पुस्तैनी खेती किसानी की जमीन बहुत कम थी जिससे चलते खेती से प्राप्त आमदनी से ही परिवार का भरण पोषण ठीक से चल सके संभव नही था। इसके लिए लोगों को वनभूमि पर जो कब्जा कर रखा है उसी भूमि मे खेती को बढ़ावा दिया जाना होगा। गांव के लोगों को बताया गया की जो आपने वनभूमि को काबिज कर रखा है उसका मालिकाना हक व पट्टा सरकार **वन अधिकार अधिनियम 2006** के तहत दाबा आपत्ति फार्म भरने पर प्रमाणित होने पर पट्टा दे रही है। फिर आप उस भूमि पर अच्छी खेती कर आमदनी कमा सकते है, इसके बाद वन अधिकार अधिनियम से प्राप्त खेती की जमीनों को विकसित करना और बाकी लोगों को वन अधिकार अधिनियम के तहत दावा लगवाकर पट्टा दिलाना और उस जमीन को खेती योग्य शासकीय योजनाओं की मदद से तैयार करना। परियोजना मे मुख्य रूप से **जैविक खेती** को बढ़ावा देना, पानी संरक्षण के काम, शासकीय योजनाओं तक लोगों की 100 प्रतिशत पहुंच बन सके इसके लिए काम कर रहे है।

आजीविका के साधन

खेती की जमीन सुनिश्चित कराना,
जैविक खेती को बढ़ावा देना,
सिंचाई की सुविधा करवाना,
खेती योग्य जमीन बनाना,
तालाब निर्माण कराना,
डेम चैक डेम बनवाना,
कम्पोस्ट व वर्मी कम्पोस्ट खाद,
गोबर खाद और केचुआ खाद बनाना,
कीटनाशक दवाई का निर्माण व उपयोग।

पूरे परियोजना मे 100 गांव के 10 हजार परिवारों के साथ अगले तीन वर्ष मे 15000 रूपये आमदनी को बढ़ाना प्रमुख लक्ष्य रखा गया है। गांव के लोग पूरी तन्मयता से परियोजना के कामों मे हाथ बंटा रहे है और हर संभव प्रयास भी कर रहे है। सरकारी योजना का लाभ गांव के सभी लोगों को प्राथमिकता से मिल सके इसे ध्यान मे रखकर काम किया जा रहा है। किसानों के खेत मे पानी की व्यवस्था करवाना, सिंचाई की सुविधा करवाना, खेती योग्य जमीन बनाना, जैविक खेती को बढ़ावा देना आदि काम कर रहे है। किसान की जमीन मे खेत तालाब योजना के तहत **तालाब निर्माण कराना, डेम चैक डेम बनवाना** जिससे पानी का रूकाव होगा और वाटर लेवल भी बढ़ेगा और जिन किसानों के पास स्वयं के खेत मे पानी की सुविधा नही उसे भी लाभ मिलेगा। जैविक खेती करने के लिए किसान अपने अपने घरों मे **गोबर खाद, कम्पोस्ट व वर्मी कम्पोस्ट खाद, कीटनाशक दवाई** का निर्माण कराकर जैविक खेती को लगातार बढ़ाने मे लगे हुए है। पिछले साल की अपेक्षा इस साल की खेती मे आमदनी 25 से 30 प्रतिशत बढ़ा है लग रहा है कि किसानों को अच्छे बाजार की उपलब्धता होगी तो उत्पादकता बढ़ने के साथ साथ आमदनी मे भी इजाफा होगा।

स्टोरी :

श्री विधि से खेती लाभदायक सबित हुई

मानव जीवन विकास समिति तेंदूखेड़ा ब्लॉक के धनगोर ग्राम पंचायत के धनगोर गांव में पिछले दो साल से समुदाय की आजीविका में सुधार हेतु कार्य कर रही हैहमने धनगोर गांव में उन्नत कृषि पद्धतियों पर कई बैठकें . और प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए हैं। प्रारंभिक प्रशिक्षण में भाग लेने के बाद, कई किसानों ने श्रीविधि से खेती करने पर अपनी रुचि दिखाई और उसे अपनाया। उनमें से एक थे मोहन सिंह गोंड। उनके परिवार में 7 सदस्य हैं स्वयं, मातापिता-, पत्नी और तीन बच्चे। उनके पास एकड़ जमीन है 2.5, जिसमें आधा एकड़ जमीन पर सब्जी और बाकी जमीन पर वह अनाज और दलहन की फसल उगाते हैं। उन्होंने कहा कि बीआरएलएफ परियोजना के क्रियान्वयन से पहले वह सामान्य खेती कर रहे थे और फसलों में रासायनिक खाद और कीटनाशकों का प्रयोग कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि मई को 2019, उन्हें एनपीएम आधारित कृषि और श्रीविधि पर मिस नंदनी गोंड सामुदायिक) प्रशिक्षित किया गया द्वारा (अभियंता था। इससे प्रेरित होकर उन्होंने श्रीविधि के माध्यम से एक बीघा भूमि में धान की खेती का अभ्यास किया था। जिसमें उन्हें पहले से अधिक उत्पादन मिला और जैविक आधारित खेती से खेती की लागत भी कम हुई। पिछले वर्ष के अनुभव के आधार पर इस वर्ष)2020-21उन्होंने श्री लाल (सिंह गोंड के मार्गदर्शन में (सामुदायिक अभियंता)2 एकड़ भूमि में श्रीविधि से धान की खेती किया है। इस वर्ष मोहन सिंह ने जैविक खाद और जैविक कीटनाशकों के साथ साथ-खरपतवार हटाने के लिए वीडर का इस्तेमाल किया। मानव जीवन विकास समिति ने प्रत्येक गांवों के बीच में 3एक टीआरसी बनाया है जहां (तकनीकी संसाधन केंद्र) आईईसी सामग्री, जैविक दवैया और कुछ कृषि उपकरण वीडर), स्प्रे पंप और टिपानउपलब्ध हैं (जिसका सभी किसान लाभ उठा सकते हैं।

मोहन ने कहा कि वीडर के प्रयोग से हमें अधिक लाभ हुआ है, निराई में लगने वाला खर्च और समय बच गया है, यह तकनीक हम सभी के लिए बहुत अच्छी है। अक्टूबर के महीने में ब्लॉक समन्वयक श्री नरेश खटीक ने 2020 धनगोर गांव का दौरा किया और श्री मोहन से मुलाकात की और उनसे श्री विधि और धान उत्पादन के अनुभव के बारे में पूछा, तो उन्होंने कहा कि नरेश जी, इस वर्ष हमें लगभग 10 क्विंटल धान प्राप्त हुई है जो पहले से 30 क्विंटल अधिक है और यह लाभ हमें श्री पद्धति से खेती करने के कारण मिला है।

Celebrating 20 years

बकरी पालन बना सहारा

श्री खुमान सिंह पिता विश्राम सिंह एक मजदूर हैं। खुमान सिंह अपने परिवार के साथ दमोह जिले के तेंदूखेड़ा ब्लॉक के सेहरी ग्राम पंचायत के सेहरी गांव में रहता हैं सेहरी गांव तेंदूखेड़ा .ब्लॉक से करीब 30 सदस्य हैं 4 खुमान सिंह के परिवार में .किलोमीटर दूर है, खुद, पत्नी और बच्चे। वह पेशे से मजदूर है। 2 पत्नी दोनों का-पतिम करते हैं और अपने परिवार का पालनपोषण करते हैं-, कोरोना वायरस महामारी के कारण उनका काम बंद हो गया और लॉक डाउन के दौरान उन्हें कई समस्याओं का सामना करना पड़ा।

परिवार की आर्थिक स्थिति दिनों दिन गिरती ही चली जा रही थी दैनिक आवश्यकता की वस्तुओं की भरपाई नही होने से परिवार आर्थिक समस्या से जूझ रहा था। मानव जीवन विकास समिति का भारत रूरल लाईवलीहुड फाउण्डेशन की मदद से आजीविका परियोजना संचालित है जिसकी मदद से लोगों की आजीविका खड़ी कर लोगों को स्वयं की आजीविका खड़ी करने प्रोत्साहित किया जा रहा है। समिति कार्यकर्ता श्री घनश्याम रैकवार फील्ड मे लगातार आते जाते रहते है एक दिन खुमान सिंह से मुलाकात हुई तब उनके पारिवारिक स्थिति के बारे मे पता चला तभी से समिति कार्यकर्ता श्री घनश्याम रैकवार इस परिवार की मदद करने के लिए आगे आये।

लॉकडाउन के समय न तो उनके पास खाने के लिए राशन था और न ही बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए पैसे, ऐसे संकट की घड़ी मे मानव जीवन विकास समिति ने उनकी मदद के लिए हाथ बढ़ाया और उन्हे सूखा राशन उपलब्ध कराया उसके साथ ही उनकी आजीविका को सुचारू रूप से चले इसके साथ ही समिति ने उन्हे 2 बकरिया मुफ्त मे दी, जिसे पाकर पति पत्नि बच्चे सहित पूरा परिवार खुशी से डूबा हुआ था। लॉकडाउन खुलने के बाद से ये परिवार मजदूरी करना शुरू किया और परिवार के खर्चे से थोड़ी बचत कर 4 बकरिया और खरीद ली उनके माध्यम से भविष्य मे आजीविका का एक स्त्रोत बन सके। गांव के लोग इनके सोंच, मेहनत और आजीविका कार्य से गांव के लोग खुश है वर्तमान मे खुमान सिंह के पास 12 बकरिया है जिससे आर्थिक स्थिति मे परिवर्तन हुआ है। इनके काम से गांव के अन्य लोग भी आजीविका कार्य मे लग गये है इससे पूरे गांव की आर्थिक स्थिति मे सुधार होगा।

Celebrating 20 years

मुर्गी पालन से मिला सहारा

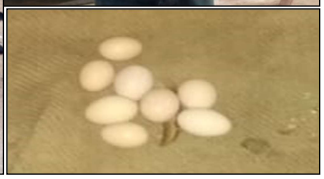

श्रीमती उमरानी बलिराम पेशे से एक छोटी किसान हैं। वह दमोह जिले के तेंदूखेड़ा ब्लॉक के सेहरी गांव की रहने वाली हैं सेहरी गांव तेंदूखेड़ा .ब्लॉक से करीब 4 उसके परिवार में .किलोमीटर दूर है 30 सदस्य हैं, खुद, पति और एकड़ जमीन है 1.5 बच्चे। उनके पास 2, जो उन्हें वन अधिकार अधिनियम के तहत मिली है। सिंचाई की सुविधा न होने के कारण वे केवल एक मौसमी फसल लेते हैं। पति-पत्नी दोनों अपने परिवार की जरूरतों को पूरा करने के लिए मनरेगा में काम करते हैं। उमरानी देवी एसएचजी की सदस्य हैं। अगस्त में एसएचजी की बैठक के दौरान पंचायत सहायक मिलन धुर्वे ने सभी को बताया कि पशु चिकित्सा विभाग की बैकयार्ड पोल्ट्री योजना के तहत इच्छुक परिवारों को मुर्गियां दी जा रही हैं 40-40, जो भी महिलाएं मुर्गी पालन में रुचि रखती हैं, वे आवेदन कर सकती हैं.

इस पर महिलाओं ने कहा कि हमारे समाज में हम मुर्गी पालन नहीं करते हैं। यह हमारा काम नहीं है, दूसरी जाति के लोग करते हैं। पंचायत सहायक ने सभी को समझाया कि ऐसा नहीं है, अब हमें अपनी सोच बदलने की जरूरत है, कोई भी रोजगार छोटा या बड़ा नहीं होता। कुक्कुट पालन एक बहुत अच्छा व्यवसाय है, जिससे लोग कम लागत में अधिक आय अर्जित कर सकते हैं। यह एक ऐसा व्यवसाय है जिसे कोई भी कर सकता है। इस पर उमरानी ने कहा कि दीदी, हम घर के पिछवाड़े मुर्गी पालन करना चाहते हैं, आप हमारा फॉर्म भर दीजिएइसके बाद पंचायत सहायक ने उमराणी का . पशु चिकित्सा विभाग को सौंप दिया फार्म भरकर।

चूजे उम 40 को पशु चिकित्सा विभाग द्वारा 2020 सितंबर 27रानी को दिए गए और उनके रखरखाव एवं आहार के बारे में विस्तार से बताया। चूजों को पाकर उमरानी बहुत खुश हुई और उनकी बहुत अच्छी तरह से देखभाल की। उमरानी से बात करने पर उन्होंने बताया कि दिसंबर और जनवरी में उन्होंने मु रुपये प्रति 1200-1000 मुर्गी और अंडा रुपये प्रति 15 नग बेचा हैजिससे उन्हें करी .ब मुर्गियां हैं और कुछ मुर्गियों 15 रुपये का मुनाफा हुआ है। उसने बताया कि उसके पास अब 21000 कि वह मुर्गी पालन से बहुत खुश हैं और मुनाफे से ने चूजे भी निकाले हैं। उमरानी का कहना हैओर ज्यादा मुर्गियां खरीदेंगी और बड़े पैमाने पर मुर्गी पालन करेंगी।

सामाजिक सुरक्षा के लिए जागरूकता और पहुंच बनाना : **फिया फाउण्डेशन के द्वारा यूएनडीपी** की मदद से चलाये जा रहे कार्यक्रम सामाजिक सुरक्षा के प्रति लोगों को जागरूक करना एवं योजनाओं तक पहुंच बनाना। यह की सामाजिक सुरक्षा की विभिन्न प्रकार की योजना चलाई जा रही है लेकिन वास्तविक व्यक्ति तक योजना का लाभ नही पहुंच पा रहा है। सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना का लाभ हेतु लोगों को उक्त क्रम मे पात्रता होगी तभी लाभ पा सकता है। उदाहरण के लिए यदि वृद्धा पेंशन योजना का लाभ प्राप्त करना है तो व्यक्ति की उम्र 60 वर्ष या उससे अधिक होनी चाहिए, आयकरदाता न हो, परिवार पेंशन प्राप्त न कर रहा हो, परिवार गरीबी रेखा मे आता हो, पात्रता रखने वाले व्यक्ति विभाग के पोर्टल मे आनलाईन आवेदन कर प्रतिमाह 600 रूपये प्राप्त कर सकता है। **यह कार्यक्रम की रिपोर्टिंग पूर्णतः आनलाईन कोबो कलेक्ट एप मे किया गया है इसके लिए पूर्व मे इन्टरनेट साथी कार्यक्रम से लाभान्वित हुए लोगों को प्राथमिकता से लाभ मिला है।** कोविड–19 आपदा प्रबंधन मे पंचायतों की भूमिका, बचाव व रोकथाम के उपाय पर काम किया गया।

योजना के प्रति जागरूक किये गये लाभार्थी का विश्लेषण - जागरूकता सम्बंधित कार्यक्रमों, बैठकों व संवाद के माध्यम से कोविड 19 और सरकारी योजनाओं का प्रचार प्रसार कर लोगों को जागरूक करने का काम किया गया। बैठक मे चर्चा व संवाद के माध्यम से लोगों को कोरोना महामारी से बचने के उपाय व भ्रामक जानकारी व संदेश से बचने पर जानकारी दी गई। साथ ही बताया गया कि सरकार की हितग्राहीमूलक योजनाओं का लाभ पात्रतानुसार ले सकते है इसके लिए आपको भी प्रयास करना होगा। यह की विशेष जानकारी के लिए पंचायत मे जाकर जानकारी ले सकते है पंचायत कार्यालय को जानकारी का सूचना केन्द्र के रूप मे विकसित किया गया है। **यह प्रोग्राम मण्डला व डिण्डौरी जिले के 10 ब्लाकों के 70 ग्राम पंचायतों के 200 गांव मे संचालित किया गया।** कार्यक्रम के दौरान मण्डला जिले मे जागरूकत किये गये लोगों की संख्या है 18645 और डिण्डौरी जिले मे जागरूक किये गये लोगों की संख्या है 20580।

योजना से जोड़े गये लाभार्थी का विश्लेषण- जागरूक किये गये लोगों को आवश्यकता व पात्रतानुसार योजनाओं मे प्रक्रियाओं का सही रूप से क्रियान्वयन कर लगातार फॉलोअप करते रहने से लोगों को उज्जवला योजना, खाद्यान्न पर्ची, सामाजिक सुरक्षा योजना, वृद्धा पेंशन, विधवा पेंशन, जॉब कार्ड बनवाकर मनरेगा मे काम दिलाना जैसे योजनाओं का लाभ हितग्राही को दिलाया गया। इसके अलावा रेडी टू ईट पोषण आहार का लाभ और सर्व शिक्षा अभियान अर्न्तगत बच्चों का शाला प्रवेश कराना आदि काम किया गया है। **यह प्रोग्राम मण्डला व डिण्डौरी जिले के 10 ब्लाकों के 70 ग्राम पंचायतों के 200 गांव मे** संचालित किया गया। **जागरूकता कार्यक्रम से लाभान्वित हुये लोगों की संख्या** मण्डला जिले से 6084 और डिण्डौरी जिले से 6404।

जनसुनवाई :– **वन अधिकार अधिनियम कानून 2006** बना जिससे अधिकांश लोगों को लाभ होगा। इस काननू के तहत वन एवं परम्परागत वनवासियों को वनभूमि पर काबिजों को पट्टा दिया जाना है जिससे कब्जा वाली जमीन का वास्तविक मालिकाना हक प्राप्त होगा। शासन की जनकल्याणकारी योजनाएँ गांवों तक सुचारू रूप से पहुँचे और पात्र हितग्राहियों को उचित लाभ मिले इस दिशा में समिति अपने कार्यकर्ताओं के साथ फिल्ड में लगातार काम कर रही है। गांवों में समूह तैयार करना, शासन की योजनाओं की जानकारी देना और उचित सलाह देते हुए संबंधित विभाग तक पहुंचाना।

एफ.आर.ए. कानून न केवल वन मे निवास करने वाली अनुसूचित जनजातियों और अन्य परम्परागत वन निवासियों के वन संसाधनों पर उनके मौलिक अधिकारों की पुष्टि करता है बल्कि वन, वन्य जीव, जैव विविधता संरक्षण के प्रति समुदायों के दायित्वों को भी सुनिश्चित करता है। आपको मालूम होगा की मानव जीवन विकास समिति गांव गांव मे आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र मे लोगों उनके अधिकार दिलाने का काम कर रही है।

समिति अपने कार्यक्षेत्र दमोह, डिण्डौरी, मण्डला व बालाघाट जिले के कई गांवो का भ्रमण कर वंचित समुदाय से चर्चा कर लोगों की मदद करने आगे आया है। लोगों से चर्चा दौरान निकलकर आया कि वनवासियों को लगातार सरकार वनभूमि से बेदखल कर रही है, खेती की फसलों को नष्ट किया जा रहा है बहुत बड़ी समस्या सामने आई। ऐसे मे लोगों का बहुतायत मे पलायन हो रहा था गांव मे रोजगार का अभाव था, खेती की भूमि नही थी किसान पलायन करने मजबूर था। तभी मानव जीवन विकास समिति कार्यकर्ताओं ने गांव गांव जाकर सर्वे किया और लोगों को **एफ.आर.ए. कानून** की जानकारी दी तब लोगों ने वनभूमि का दाबा, आपत्ति फार्म भरवाया जिससे लोगों को अपनी काबिज भूमि का पट्टा सरकार द्वारा दिया गया।

प्राप्त पट्टो की जानकारी इस प्रकार है : दमोह जिले मे वन एप मित्र पोर्टल मे 4249 आवेदन दर्ज हुए है जिसमे से 263 परिवार को पट्टे प्राप्त हुए। डिण्डौरी जिले मे 151 पट्टे, मण्डला जिले मे 121 पट्टे, बालाघाट जिले मे 105 पट्टे प्राप्त हुए। अब लोगों के साथ मिलकर तय किया गया की आप अपनी भूमि को खेती योग्य बनाईये, खेती की जमीन पर सिचाई की सुविधा कराईये कुछ सरकार की योजनाओं से कुछ लोगों के खुद की मेहनत से जमीन को खेती योग्य बनाया गया। वन अधिकार अधिनियम (एफआरए) से प्राप्त जमीन पर जैविक खेती कराया जाकर उनकी आमदनी को बढ़ाया जा रहा है। पिछले सालों की अपेक्षा इस साल जैविक खेती से किसानों को आमदनी मे 25 से 30 प्रतिशत अतिरिक्त लाभ हुआ है।

तमादी (गरीमा) इंडिया

ग्रामीण पर्यटन:– रूरल टूरिज्म प्रोग्राम मानव जीवन विकास समिति ने फ्रान्स की संस्था तमादी के साथ मिलकर रूरल टूरिज्म (ग्रामीण पर्यटन) की अवधारणा के अनुसार एक सामाजिक और सांस्कृतिक अदान–प्रदान की गतिविधियों का संचालन कर रही है। भारत में हमने तीन तरह के सर्किट बनाकर रखे हैं और तमादी के साथ मिलकर आगे बढाते हैं जिसमें 15 दिन, 17 दिन एवं 25 दिन शमिल है। 15 दिन में दिल्ली से जयपुर , अलवर, उदयपुर, आगरा, से दिल्ली वापसी तथा 17 दिन में दिल्ली से कटनी या भोपाल, उमरिया, सिहोर, बोरी, सांची, आगरा से दिल्ली वापसी। 25 दिन वाले में कटनी, उमरिया, भोपाल, सिहोर जयपुर, उदयपुर, जोधपुर ओर्छा खजुराहो से वापसी दिल्ली होते हुए अपने देश को रवाना हो जाते है।

गांव के समूह कल्चरर एक्सचेंज प्रोग्राम के तहत तमादी द्वारा भेजे जा रहे मेहमानों के आवास एवं भोजन की व्यवस्था में सहयोग करते है। और जो पैसा लॉज व होटल मे रूकने पर खर्च होता था वह पैसा गांव के समूह को ही दिया जाता है जिससे समूह से जुड़े लोगो की आर्थिक स्थिति म सुधार हुआ है। गांव मे ही लोगों के बीच रहते है लोकल कल्चर को देखते व सीखते है। विदेशी ग्रुप का गांव मे आने जाने से गांव के समूह का भी सुधार हुआ है। गांव मे लोगों का समूह अच्छा मजबूत है, समूह मे काम करना लोगों को अच्छा भी लगता है। यहां के आदिवासी लोगों का लोकल सांस्कृतिक कल्चर काफी प्रसिद्ध है जिसे दूर दूर से लोग देखने आते है काफी देखने व सीखने योग्य है।

विदेश से आने वाले महिला, पुरूष, बच्चे सभी का गॉव में ही रूकना, गॉव में खाना खाना और गांव के परिवारजनों के साथ मिलकर बैठक, संवाद, चर्चा परिचर्चा कर वहां के परिवेश को जानना व समझना शामिल है। वही 4–5 दिन तक रूक कर गांव की संस्कृति से परिचित होना, गांव में चल रही आर्थिक गतिविधियों को देखना समझना, खेती जैसे कार्यक्रमों में बढ़ चढ़कर हिस्सा लेना आदि गतिविधियॉ शामिल रहती है। सामाजिक सांस्कृतिक आदान–प्रदान और आर्थिक सहायता के माध्यम से लोगों की गरीबी दूर करना। विदेशियों के यात्रा लागत का 8 से 10 प्रतिशत समूहों को राशि प्राप्त होती है जिससे गैर कृषि कार्य को बढ़ावा देने कार्य किया जा रहा है।

गो–रूर्बन कैम्पः– मानव जीवन विकास समिति अपने उद्देश्यों के अनुरूप समाज व देश में अहिंसा को बढावा देने के लिए कई प्रकार की गतिविधियां संचालित करती हैं, जिसके अंतर्गत युवाओं में अहिंसा की शिक्षा के सैद्वांतिक और व्यावहारिक समझ विकसित किया जाता है। इसके लिए शहरी व ग्रामीण युवाओं का गोरूरवन कैम्प आयोजित किया जाता है जिससे दोनों मिलकर एक दूसरे के परिवेश को समझेंगे और विकास की रणनीति बनायेंगे। इस प्रकार से साल मे 4–5 कैम्प लगाये जाते है जिससे युवा अपनी स्वेच्छा से भाग लेता है और गतिविधि मे मदद् करता है।

ये ग्रुप गांव के लोगों को जागरूक करने का काम करती है जिससे आगे आकर विकास का हिस्सा बने। गांधीवादी विचारधारा को अपनाने व उनके बताये मार्ग पर चलने के लिए लोगों को अधिकांशतः प्रोत्साहित किया जा रहा है। यह की आगे आने वाले समय मे विकास का मार्ग प्रसस्त होगा। शैक्षणिक संस्थानों मे अहिंसात्मक शिक्षा को प्रोत्साहन व बढ़ावा मिलेगा। इस कैम्प के माध्यम से अहिंसा की शिक्षा दी जाती है, इससे एकता, समानता, सामूहिकता, सौह्रार्द की भावना का विकास होता है। सामाजिक कार्य मे लगे समाजसेवी गोरूरबन कैम्प मे भाग लेकर अपने आप को दक्ष बनाते है। इस वर्ष के कैम्प मे 18 प्रतिभागी जुडकर शिविर को समझा जाना है।

Celebrating 20 years

इन्टर्नशिप

(अजीम प्रेमजी युनिवर्सिटी छात्र)

ग्रीष्मकालीन इन्टर्नशिप कार्यक्रम
जून – अगस्त 2020
छात्र – सरस गांधी और सना पटेल

संस्था मानव जीवन विकास समिति कटनी के द्वारा समिति सचिव निर्भय सिंह के मार्गदर्शन मे समिति कार्यकर्ता राम किशोर चौधरी और चद्रपाल कुशवाहा की मॉनीटरिंग मे ऑनलाईन इन्टर्नशिप कार्यक्रम चलाया गया। सबसे पहले समिति के बारे मे समझ बनाया गया समिति की गतिविधियों को समझा गया इसमे वन अधिकार अधिनियम पर आधारित गतिविधियें को फोकस किया गया है इसके अलावा समिति अन्य गतिविधियों को भी प्रोजेक्ट आधारित संचालित कर रही है। संस्था की रिपोर्ट, केस स्टोरी एवं सोशल मीडिया ग्रुप के अध्ययन से हमे अपने पाठ्यक्रम मे मदद मिली।

समिति निम्न निम्न गतिविधियों पर हस्तक्षेप कर रही हैं :

पर्यावरण – भू–प्रबंधन, जल प्रबंधन, कार्बनिक कृषि, स्वच्छता और अपशिष्ट प्रबंधन, पर्यावरण संरक्षण और सम्वर्धन।
इन्टाईटलमेन्ट – वकालत, वन अधिकार अधिनियम, पंचायतीराज, स्वास्थ्य प्रबंधन।
सशक्तिकरण – महिला सशक्तिकरण, ग्रामीण विकास प्रशिक्षण, ग्रामीण युवा क्षमता विकास, बाल कला प्रशिक्षण।
अन्य गतिविधियां – आपदा प्रबंधन और राहत कार्य से सम्बंधित काम कर रहे है।
समिति इन गतिविधियों के बेहतर क्रियान्वयन पर कार्य कर रही है।
इन्टर्नशिप अध्ययन कर रहे छात्रा का कहना है कि हमने जमीनी हकीकत और सिद्धांत के साथ इसकी समानताएं, जुड़ाव और अंतर को समझ लिया है। इस अवसर ने हमे जमीनी स्तर के कर्मचारीयों के साथ बातचीत करने और हस्तक्षेप मे शामिल प्रक्रियाओं को समझने मे मदद की। हमे दिये गये कार्यो और संगठन के कार्यकर्ताओं ने पंचायतीराज संस्था, वन अधिकार अधिनियम, सूक्ष्म स्तरीय योजना, मनरेगा, राहत कार्य के विभिन्न पहलुओं के बारे मे समझ विकसित हुई इसे सीखने का अच्छा अनुभव रहा है।

स्कालरशिप प्रोग्राम

स्कालरशिपः– विशेष आवश्यकता वाले सामाजिक कार्यकर्ता व उनके बच्चों को समिति के द्वारा स्कालरशिप दिया जाता है, जिससे आवश्यकतानुसार सुविधा मिल सके। काफी लम्बे समय से सामाजिक क्षेत्र में काम कर रहे सामाजिक कार्यकर्ताओं व उनके बच्चों की पढाई हेतु समिति को प्राप्त आवेदनों के अनुसार विचार विमर्ष कर स्कालरशिप प्रदान किया जाता है।

एजुकेशन सपोर्ट– इसके अन्तर्गत आर्थिक स्थिति से कमजोर परिवार के बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने के लिए समिति द्वारा परिवार को सपोर्ट किया जाता है। ऐसे परिवार के बच्चों को सपोर्ट किया जाता है जो वास्तव मे शिक्षा प्राप्त करना चाहता है लेकिन माता पिता अपने बच्चों को शिक्षा के लिए मदद करने मे अश्मर्थ है, **ऐसे 5 बच्चों को सपोर्ट किया गया है।**

रिस्क सपोर्ट– इसके अन्तर्गत सामाजिक क्षेत्र मे कार्य कर रहे सामाजिक कार्यकर्ताओं के बच्चों को आर्थिक सपोर्ट करना समिति का निर्णय है जिससे स्वास्थ्य सुविधा मिल सके। यह की समिति से जुड़े कार्यकर्ता व उनके परिवार के अन्य सदस्य जब कभी लम्बी व गंभीर बीमारी से जूझ रहा होता है तो समिति अपने कमेटी से विचार विमर्श कर सपोर्ट करने का निर्णय लेती है। **ऐसे 16 लोगों की मदद की गई है।**

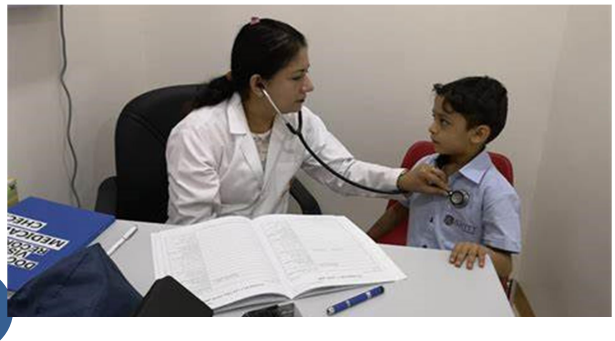

नवाचार

नवाचार

- **बीज बैंक की स्थापना** : मानव जीवन विकास समिति भारत रूरल फाउण्डेशन दिल्ली की मदद से दमोह जिले के तेन्दुखेड़ा ब्लॉक के पांच गांव मे जैविक बीज और खाद का स्टोरेज किया है जिससे किसानों को प्रशिक्षण देकर जैविक खेती का काम शुरू किया है। इससे उत्पादकता तो बढ़ रही है साथ ही साथ रासायनिक युक्त खाद बीज का उपयोग करने से लोगों मे अनेको अनेक बीमारी का सामना करना पड़ रहा था बच्चों मे कुपोषण भी इसी वजह से बढ़ रहा था अब उसे भी रोका जा रहा है।

- **सूचना केंद्र की स्थापना** : सूचना केन्द्र मे विभिन्न प्रकार की जानकारी जुटाकर रखी गई है। सामाजिक आर्थिक सहायता कार्यक्रम, योजनाओं की जानकारी बुक, जानकारी कानून की, शिक्षा का अधिकार, पंचायत सामुदायिक आधारित स्वच्छता सेवाओं की निगरानी, पोषण की समक्ष और उपाय एवं अन्य पोस्टर्स भी केन्द्र मे उपलब्ध कराया गया है। सूचना केन्द्र 16 पंचायतों मे खोले गये है जिससे अधिकतर लोगों को लाभ पहुंचेगा आवश्यक जानकारी सूचना केन्द्र से प्राप्त कर सकते है। **सूचना केंद्र में आए लोगो की संख्या** जिला मण्डला मे 592, डिण्डौरी जिले मे 526 है। **योजना से जोड़े लाभार्थी** मण्डला मे 835 और डिण्डौरी मे 814 लोग है।

- **एनपीएम आधारित खेती को बढ़ावा** : किसानों के लिए एक वरदान साबित हो रही है। जैविक खाद, कम्पोस्ट व वर्मीकम्पोस्ट खाद एवं कीटनाशक दवा के छिड़काव व उत्पादित अनाज से लोगों मे साईड इफेक्ट नही होता है साथ ही सभी किसान अपने आस पास से उत्पादित वनस्पति से ही कीटनाशक तैयार कर अच्छी उत्पादन ले रहे है, इससे रासायनिक दवाईयों मे खर्चा नही होता था है इससे साबित होता है कि यह एनपीएम पद्धति खेती के लिए वरदान है।

- **प्रवासी मज़दूर पंजी का संधारण** : प्रवासी मजदूर पंजी रजिस्टर अभी पंचायत स्तर पर सूचना केन्द्र के साथ ही पंचायत की जिम्मेदारी मे संधारित करने हेतु रखा गया है और गांववार प्रवासी की जानकारी कलेक्ट करने के लिए अपने ग्रामसाथी व इन्टरनेट साथी एवं सक्रिय कार्यकर्ता को जिम्मेदारी दिया गया है। वर्तमान मे अभी गांव से लोग पलायन किये है जैसे ही पलायन मे जाना शुरू होगा रजिस्टर मे जानकारी एन्ट्री करना शुरू हो जायेगा। कुछ पंचायतों मे प्रवास से वापस आ रहे लोगों की पहचान कर प्रवासी मजदूर रजिस्टर मे एन्ट्री करना भी शुरू कर दिया गया है। सूचना

केन्द्र के माध्यम से पता चला है कि गांव से लगभग 25 से 30 प्रतिशत लोग प्रवास मे जाते ही है।

- **ग्रामसभा मोबलाईजेशन :** ग्रामसभा पंचायतीराज का सबसे पावरफुल सत्ता माना गया है, ग्रामसभा द्वारा पारित प्रस्ताव कभी भी निरस्त नही होता है। एक वर्ष मे 4 ग्रामसभा लगाना अनिवार्य है इसके अलावा विशेष ग्रामसभा आयोजित की जा सकती है। ग्रामसभा मे कोरोना से बचाव की जानकारी दी गई साथ मे कोरोना गाईड लाईन का पालन करते हुए ग्रामसभा आयोजित करने को कहा गया है। ग्रामसभा मे महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने लोगों को जागरूक किया गया महिला सुरक्षा के मुद्दे जोड़ा जाये।

- **पोषण जागरूकता कार्यक्रम :** पोषण जागरूकता कार्यक्रम मण्डला व डिण्डौरी जिले के विभिन्न गांव मे आयोजित किया गया। यह की दिनों दिन महिलाओं व बच्चों मे पोषण समस्या बढ़ती ही जा रही है इसे दूर करने के लिए सरकार भी विभिन्न तरह के प्रोग्राम संचालित कर रही है जिसमे पोषण माह कार्यक्रम भी आंगनवाड़ी मे सभी गांव मे चला रही है लेकिन ग्रामीणों मे कोई रूचि नही देखी गई जिससे प्रभावित होकर संस्था कार्यकर्ता गांव गांव मे लोगों को सरकार की योजनाओं को पहुंचाने का काम कर ही रहे थे तभी पोषण माह कार्यक्रम मे सम्मिलित होने ग्रामीणों को जागरूक किया गया और बताया गया की यह कार्यक्रम आपके परिवार के लिए बहुत ही लाभकारी होगा। आने वाले समय मे बच्चों व महिलाओं मे पोषण की समस्या नही रहेगी इसलिए आप लोग आंगनवाड़ी मे जाकर पोषण से सम्बंधित दी जाने वाली जानकारी से रूबरू होकर अपने घरों मे ऊगाई जाने वाली सब्जी के उपयोग से सभी सुपोषित होंगे।

- **अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस कार्यक्रम :** महिलाओं के सम्मान मे आयोजित कार्यक्रम मे समिति कार्यकर्ताओं ने कहा महिला देवी स्वरूप होती है हम सबको महिलाओं का सम्मान करना कर्त्तव्य है। यह भी बताया गया कि महिलाओं को समाज मे स्थान मिलना चाहिए घर, परिवार व समाज मे महिला और पुरूष दोनों को बराबरी का दर्जा दिया जाना चाहिए। पढ़ाई, खेलकूद व नौकरी मे परिवार को चाहिए की लड़का और लड़की दोनों को प्राथमिकता से पढ़ाई कराते हुए खेलकूद और नौकरी मे बराबरी का हिस्सेदारी होना चाहिए।

प्रतिवर्षानुसार इस वष भी समिति कार्यकर्ताओं के द्वारा कार्यक्षेत्र मे महिलाओं के सम्मान मे अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य मे महिला सम्मान कार्यक्रम आयोजित किया गया। उत्कृष्ट कार्य करने वाली महिलाओं को समिति द्वारा सम्मानित भी किया गया। समिति उत्कृष्ट कार्य कर रही महिलाओं को सम्मानित करते हुए

Celebrating 20 years

गौरवान्वित महसूस कर रही है आशा करती है कि सभी महिलाओ के सम्मान मे आगे आयेंगे।

- जल संरक्षण के लिए तालाब निर्माण : **श्रमशक्ति अभियान की शुरूआत मानव जीवन विकास समिति द्वारा किया गया जिसका उद्धेश्य है हर हाथ को काम मिले जैसा की आप सभी को विदित है कि कोरोना महामारी (कोविड 19) का कहर पूरी दुनिया मे फैलने की वजह से हर व्यक्ति को समस्या का सामना करना पड़ा। यदि देखा जाये तो गांव के बच्चे, जवान, बुजुर्ग, किसान व मजदूर सभी को अपने घर मे रहने को बाध्य होना पड़ा ऐसी स्थिति मे गांव घर मे ही हर हाथ को काम मिले इसीलिए तालाब विस्तारीकरण का काम शुरू किया गया।**

– कटनी के जिले के बड़वारा ब्लाक अन्तर्गत बरगवां पंचायत के जमुनिया गांव मे लगभग 20 वर्ष पुराना तालाब खंडहर अवस्था मे पड़ा था कई जगह से टूटफूट होने से पानी का रूकाव नही हो पा रहा था अब मानव जीवन विकास समिति द्वारा पंचायत की अनुमति से तालाब का नवीनीकरण (गहरीकरण) का काम 1 फरवरी 2021 से शुरू किया है जिसमे लगभग 30 से 40 लोगों को अपने गांव मे ही रोजगार व काम मिल गया साथ ही अब आने वाले समय मे जमुनिया गांव मे तालाब मे पानी होने से जल स्तर बढ़ेगा पानी की समस्या भी नही होगी। काम की शुरूआत होते ही ग्रामीण जनों मे काफी उत्साह है। तालाब गहरीकरण का काम शुरू करवाकर तालाब का काम पूरा करवाया गया इससे लगभग 50 परिवार को फायदा होगा।

– दमोह जिले के तेन्दुखेड़ा ब्लॉक अन्तर्गत जामुन, ससनाखुर्द व मझगुवा गांव मे श्रमशक्ति अभियान के दौरान तालाब निर्माण कराया गया जिसमे इन तालाब से गांव के लगभग 200 किसानों के खेत मे पानी पहुंचेगा और किसान अपने खेत से अच्छी फसल उत्पादित कर अपने परिवार का पालन पोषण कर सकेंगे। लोगों का मानना है कि वन अधिकार अधिनियम के तहत प्राप्त भूमि का विकास कर उसी मे जीवन यापन किया जाये, इसके लिए सभी किसान ग्रामीण मुखियाओं ने संगठन कार्यकर्ताओं की मदद से अपने गांव मे तालाब बनवाने की बात रखी जिसमे संगठन द्वारा तालाब बनाये जाने तय हुआ। लोगों का मानना है कि तालाब होने से जल संरक्षण होगा, वाटर लेवल भी बढ़ेगा, खेतों को फसल उत्पादन के लिए पर्याप्त पानी मिल सकेगा।

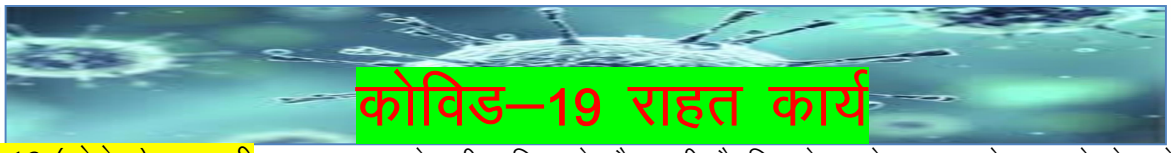

कोविड–19 राहत कार्य

Covid-19 (कोरोना) महामारी व्यापक रूप से पूरी दुनिया मे फैल रही है जिसके मद्देनजर रखते हुए पूरे देश मे पहले चरण मे 21 दिन का 25 मार्च से 14 अप्रैल तक का लॉकडाउन किया गया। इस महामारी के चलते लॉकडाउन के कारण संक्रमित लोगों व मरीजों की संख्या मे कमी तो आई है लेकिन वही दूसरी तरफ देखा जाये तो पलायन किये मजदूर दूसरे राज्यों मे कम्पनियो व फैक्ट्रियों मे जहां काम कर रहे थे वही के वही रह गये। यातायात साधन की व्यवस्था न होने से मजदूर जहां काम कर रहे थे वही फंसे रह गये। दूसरा गांव घर मे रह रहे दिहाड़ी मजदूरी कर रहे लोगों का भी जीवन दूभर हो गया। इस परिस्थिति मे प्रशासन और विभिन्न सामाजिक संगठन व संस्थाऐं अपने अपने स्तर पर लोगों की मदद् कर रहे है। मानव जीवन विकास समिति एक गैर सरकारी संगठन है। जो मध्यप्रदेश के सदूर ग्रामीण अंचलों मे लोगों की आजीविका के विषय पर काम कर रही है। समिति अपने स्तर पर कुछ महत्वपूर्ण कदम उठाकर कार्य को अंजाम दे रही है।

4000 मास्क तैयार कर वितरण किया गया – मानव जीवन विकास समिति द्वारा 4000 मास्क तैयार करवाया जाकर लोगों का निःशुल्क वितरण किया गया। कटनी जिले के बड़वारा ब्लॉक के 20 गांव के 1000 लोगों को और दमोह जिले के तेन्दुखेड़ा ब्लॉक के 60 गांव के 3000 लोगों को मास्क वितरण किया गया। साथ ही कोरोना महामारी से बचने के उपाय भी बताये गये। कोरोना महामारी से बचने क्या सावधानी रखनी है बताया गया। बताया गया की लॉकडाउन का पालन सभी को करना है, बिना जरूरी काम के किसी को भी घर से बाहर नही निकलना है सबको घर पर ही रहना है। साफ सफाई का विशेष ध्यान रखा जाये सेनेटाईजर का उपयोग किया जाये सावधानी ही बचाव है।

सोशल डिस्टेंशिंग जागरूकता संदेश –
समिति अपने पास के ही गांव मझगवां के किराना दुकानों मे सोशल डिस्टेंशिंग रखने दुकानदारो से सम्पर्क कर जानकारी व समझाईस दी गई साथ ही दुकान के सामने 1 मीटर की दूरी पर गोलाकार बनाया गया। जिससे लोगों मे जागरूकता आयेगी। क्रमानुसार गोला मे ही खड़े होकर खरीदी करेंगे जिससे सोशल डिस्टेंशिंग बनी रहेगी। सोशल डिस्टेंशिंग मे 1 मीटर की दूरी बनाये रखना व मास्क का इस्तेमाल करना यह लोगों की जिम्मेदारी है। लोगों को भी बताया गया की आप सभी को कोरोना महामारी से बचने के लिए समझदारी से काम लेना ही उपाय है।

कोरोना राहत खाद्य सामग्री का वितरण –
आपको बताना चाहेंगे कि कोरोना महामारी के चलते देश मे लॉकडाउन होने से काफी लोगों को खाद्यान्न की समस्या हुई है। ऐसे मे मानव जीवन विकास समिति भारत रूरल लाईवलीहुड फाउण्डेशन दिल्ली के मार्गदशन मे ग्रामीण अंचल मे लोगों की दैनिक आवश्यकता की वस्तुओं को ध्यान मे रखते हुए अति आवश्यकता वाले लोगों का चयन किया गया। जिनके पास खाने आदि की व्यवस्था नही हो पा रही थी उसे ध्यान मे रखकर क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं की मदद् से 25 पंचायत के 60 गांवो के 750 परिवार को उपलब्ध कराया गया। इसके अलावा दमोह मे 100 पैकिट अतिरिक्त और डिण्डौरी मे 100 पैकिट, मण्डला मे 100 पैकिट खाद्यान्न सामग्री वितरण मे सोशल डिस्टेंशिंग का भी ध्यान रखा गया। किट मे रखी वस्तुओं का उपयोग करने लॉकडाउन का पालन करने घर से बाहर न जाने लोगों को जानकारी भी दिया गया।

किट मे आवश्यक खाद्यान्न सामग्री आटा 5किलो, चावल 5 किलो, दाल डेढ़ किलो, चना 1 किलो, तेल आधा किलो, गुड़ 1 किलो, हल्दी 100 ग्राम, धनिया 100 ग्राम, मिर्ची 100 ग्राम, नमक 2 किलो, निरमा 1 पाव, साबुन 4 नग, बिस्किट 4 पैकिट, सैनेटरी 2 पैकिट।

Celebrating 20 years

मानव जीवन विकास समिति की 20-वीं वर्षगांठ

28 नवंबर 2020

असीम आनंद और कृतज्ञता के साथ 28 नवंबर 2020 को हम मानव जीवन विकास समिति (एम. जे. वी. एस), कटनी, मध्य प्रदेश के 20वीं वर्षगाँठ मना रहे हैं। पिछले कई वर्षों को स्मरण करके, हम आज एम. जे. वी. एस के सामूहिक प्रयासों का परिणाम देख सकते हैं- एम. जे. वी. एस ने हजारों लोगों को न केवल स्थानीय स्तर पर, बल्कि राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी प्रभावित किया है। इसके युवा विकास, महिला सशक्तीकरण, वन और भूमि अधिकार, जैविक कृषि और वाटरशेड विकास के माध्यम से स्थायी आजीविका मॉडल पर आधारित ग्रामीण विकास परियोजनाओं का प्रभाव कई क्षेत्रों में ठोस रूप से दिखाई पड़ता हैं।

COVID-19 महामारी के चलते ये साल एम. जे. वी. एस के लिए भी असाधारण रहा है, परन्तु कुछ नए परियोजनाओं का प्रारम्भ हुआ। प्रवासी मजदूर जो पलायन कर बाहर चले गए थे, उनके लौटने पर उनके लिए विभिन्न राहत कार्य किए गए, जिनसे दीर्घकालिक कृषि और गैर कृषि परियोजनाएँ जैसे कि बीज बैंक, मुर्गी पालन और पशुपालन की शुरुआत हुई। ये उभरती हुई परियोजनायें हमे हमारे उद्देश्य, यानी पर्यावरण अनुकूल अहिंसक अर्थव्यवस्था के लिए विकास के वैकल्पिक मॉडल तैयार करने की ओर बढ़ा रहे हैं। दूसरे शब्दों में, स्वराज के लिए विभिन्न प्रयोगों को साकार करने की दिशा में हम बढ़ रहे है।

दुनिया भर से हमारे मित्रों, शुभचिंतकों और समुदाय के सदस्यों के सहयोग के बिना दो दशक पूरे करना असंभव था। इस 20 वीं वर्षगांठ के अवसर पर हम उन सभी का आभार व्यक्त करते हैं एवं गरीबी उन्मूलन और स्थायी सामाजिक विकास मॉडल बनाने के हमारे सामूहिक वैश्विक मिशन की ओर बढ़ने का संकल्प लेते हैं। 20 वीं वर्षगांठ को मनाते हुए हम आप सभी को संवाद और संगति की इस यात्रा में हमारे साथ सह-यात्रा करने के लिए आमंत्रित करते हैं।

शुभकामना संदेश

ललित शाक्यवार
भा.पु.से.
पुलिस अधीक्षक
LALIT SHAKYAWAR
I.P.S.
Superintendent of Police

कार्यालय पुलिस अधीक्षक
जिला–कटनी (म.प्र.)
Office of the Superintendent of Police
Distt. KATNI (M.P.)
Ph. (O) : 07622-222786
Ph. (R) : 07622-224300
Fax : 07622-222786
Mobile : 7049100443
E-mail : sp_katni@mppolice.gov.in

अर्द्ध शासकीय पत्र क्रमांक/पु.अ./कटनी/ निजीवृ/ 444/2020 दिनांक 12/11/2020

To
Dear Nirbhay ji.

// शुभकामना संदेश //

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि मानव जीवन विकास समिति बिजौरी तहसील कटनी द्वारा एक पुस्तक का प्रकाशन सामाजिक क्षेत्रों में किये गये विभिन्न कार्यों की प्रगति की रिपोर्ट विशेषांक के रूप में किया जा रहा है। यह पुस्तक निश्चित रूप से महाकौशल अंचल के पिछड़ी जनजाति बैगा एवं अन्य समुदाय के लिये मार्गदर्शक होगी।

पुस्तक के विशेषांक के प्रकाशन में मेरी शुभकामनाऐं।

With best wishes

Lalit
(ललित शाक्यवार)
पुलिस अधीक्षक
कटनी

प्रति,
सचिव,
मानव जीवन विकास समिति
बिजौरी जिला कटनी।

एस. बी. सिंह
आई.ए. एस.
कलेक्टर एवं जिला दंडाधिकारी
कटनी (म.प्र.)

कोड : 07622
कार्या. : 220009
निवास : 226500
फैक्स : 222266
email : dmkatni@nic.in
कार्यालय कलेक्टर कटनी

अर्द्ध शास. पत्र क्र..............................
कटनी, दिनांक ....

शुभकामना संदेश

यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि मानव जीवन विकास समिति, बिजौरी, तहसील कटनी द्वारा एक पुस्तक का प्रकाशन सामाजिक क्षेत्रों में किये गये विभिन्न कार्यों की प्रगति की रिपोर्ट विशेषांक के रूप में किया जा रहा है। यह पुस्तक निश्चित रूप से महाकौशल अंचल के पिछड़ी जनजाति बैगा एवं अन्य समुदाय के लिये मार्गदर्शक होगी।

पुस्तक के विशेषांक के प्रकाशन में मेरी शुभकामनायें।

भवदीय
3/11/2020
(एस.बी.सिंह)

प्रति,
सचिव,
मानव जीवन विकास समिति,
बिजौरी (म.प्र.).

Ph : 222345(O), 222001(R)
Fax : (07812) 222029
E-mail : dmdamoh@nic.in

कार्यालय कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट, दमोह (म.प्र.)

क्रमांक / शी.ले. / 2020 / 6830 दमोह, दिनांक : 28 / 11 / 2020

शुभकामना संदेश

यह हर्ष का विषय है कि संस्था "मानव जीवन विकास समिति बिजौरी (मझगुवॉ) जिला कटनी" अपने स्थापना का 20वॉं वर्ष मना रही है तथा इस सुअवसर पर अपने कार्यो की प्रगति को संकलित कर एक विशेषांक का प्रकाशन करने जा रही है ।

अतएव आशा है कि समिति द्वारा प्रकाशित की जा रही पत्रिका ग्रामीणजनों को उपयोगी होगी तथा अन्य संस्थाओं हेतु भी पथप्रदर्शक होगी ।

पत्रिका प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं ।

भवदीय
(तरूण राठी)
कलेक्टर, दमोह

कार्यालय- प्राचार्य शासकीय तिलक स्नातकोत्तर महाविद्यालय कटनी
• 26.09.18 को नैक द्वारा B++ ग्रेड प्राप्त • अग्रणी महाविद्यालय, जिला- कटनी •
Phone : 07622-292113, E-Mail : gtc_katni@yahoo.co.in, hegtckat@mp.gov.in

कटनी, दिनांक 24.11.2020

// शुभकामना संदेश //

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि मानव जीवन विकास समिति बिजौरी, तहसील- बड़वारा, जिला- कटनी द्वारा सामाजिक क्षेत्रों में किये गये 20 वर्षीय विभिन्न कार्यों की प्रगति की रिपोर्ट संकलित कर विशेषांक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। यह पुस्तक निश्चित रूप से वंचित समुदाय के लिए मार्गदर्शक होगी।

पुस्तक के विशेषांक के प्रकाशन में मेरी शुभकामनाएँ

(डॉ. एस.के. खरे)
Principal
Govt. Tilak P.G. College
KATNI (M.P.)

Celebrating 20 years

उपलब्धियां

क्रं.	गतिविधियां	संख्या
1	वन अधिकार अधिनियम के तहत आवेदन दिलाये गये	4249
2	वन अधिकार अधिनियम के तहत प्राप्त भूमि	263
3	मिट्टी परीक्षण कराकर कार्ड तैयार कराना	3475
4	प्राप्त भूमि मे एसआरआई पद्धति से खेती	2354
5	कृषि बिजली हेतु ट्रांसफार्मर	5
6	चैकडेम, स्टापडेम निर्माण	48
7	सामुदायिक तालाब	274
8	भूमि समतलीकरण	509
9	किचिन गार्डन	1703
10	कुंआ निर्माण	160
11	बोरी बंधान	113
12	प्लान्टेशन	404
13	कम्पोस्ट, वर्मीकम्पोस्ट निर्माण	6
14	नाडेप, भू–नाडेप निर्माण	74
15	सूचना केन्द्र की स्थापना	16
16	बीज बैंक की स्थापना	39
17	शासकीय योजनाओं के प्रति जागरूकता	39225
18	शासकीय योजनाओं से लाभान्वित	12488
19	बकरी पालन एवं मुर्गीपालन	577
20	ग्रामसभा मोबलाईजेशन	135
21	समूह निर्माण	128
22	अजोला	381
23	प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि सहायता	6137
24	प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना	2598
25	प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना	3420
26	किसान क्रेडिट कार्ड	1947
27	आयुष्मान कार्ड	4468
28	विधवा पेंशन	634
29	वृद्धा पेंशन	788
30	स्कालरशिप : रिस्क सपोर्ट	16
31	स्कालरशिप : एजुकेशन सपोर्ट	5
32	कोविड–19 से प्रभावितों की मदद राहगीरों को भोजन प्रदाय	1500
33	राहत कार्य (कोविड–19 प्रभावितों को) खाद्यान्न किट प्रदाय	1050
34	स्वास्थ्य – कुपोषित बच्चों को एनआरसी मे भर्ती	75
35	शिक्षा – बच्चों का स्कूल मे दाखिला	700
36	आजीविका के अवसर मिले	90
37	हर्बल गार्डन (औषधीय पौधा रोपण)	300
38	इन्टर्नशिप अजीम प्रेमजी युनिवर्सिटी छात्रा	2

प्रभाव

- वन अधिकार अधिनियम के तहत काबिज वन भूमि का अधिकार पत्र प्राप्त हुआ।
- वन अधिकार से प्राप्त भूमि को खेती योग्य बनाया गया (भूमि समतलीकरण)।
- वन अधिकार से प्राप्त भूमि पर पानी की सुविधा उपलब्ध कराई गई।
- सिंचाई हेतु बिजली का ट्रान्सफार्मर लगवाया गया।
- मिट्टी परीक्षण कराकर उपर्युक्त फसल की बोवाई कराई गई।
- अच्छी उपज लेने के लिए किसानों को एस.आर.आई. पद्धति से खेती कराई गई।
- अनुपजाऊ भूमि मे प्लान्टेशन कराया गया।
- नाडेप, भूनाडेप, कम्पोस्ट, वर्मीकम्पोस्ट खाद किसानों के घर तैयार कराया गया।
- जैव कीटनाशक प्रबंधन कराया गया।
- किसानों को सुविधानुसार बीज बैंक की स्थापना की गई।
- सूचना केन्द्र की स्थापना की गई लोगों को केन्द्र मे ही सुविधा मिल रही है।
- किचिन गार्डन से पोषण की गुणवत्ता मे सुधार हुआ है।
- ग्रामसभा मोबलाईजेशन से ग्रामसभा मे भागीदारी बढ़ी है।
- शासकीय योजनाओं का लाभ आसानी से लोगों तक पहुंच रही है।
- लोगों की आजीविका खड़ी करने स्वरोजगार को बढ़ावा मिला है।

भावी योजनाएं

- समिति के कार्य को दूसरे राज्यों मे फैलाना।
- आजीविका के साधन मे 20 हजार किसानों के साथ काम को मजबूत करना।
- कम से कम दो ब्लॉको मे सघन रूप से संगठन को मजबूत करना।
- रूरल टूरिज्म को 8 सर्किट से बढ़ाकर 15 सर्किट तक पहुंचाना।
- ट्रेनिंग सेंटर को जैव विविधिता के रूप मे विकसित कर तैयार करना।
- 150 गांवों को सघन रूप से गाँधी विचारधारा से तैयार करना।
- युवाओं के साथ (ग्रामीण एवं शहरी) नेटवर्क खड़ा करना।
- महिला सशक्तिकरण, बाल अधिकार, शिक्षा, स्वास्थ्य पर ज्यादा बल देना।
- जैविक खेती, बीज बैंक, अनाज बैंक को मजबूत करना। ताकि गाँव–गाँव मे खाद्यान्न की कमी न हो।
- सरकारी योजनाओं तक लोगों की पहुंच सुनिश्चित करना।

फोटो

जागरूकता अभियान BRLF
कोरोना महामारी एवं सरकार द्वारा संचालित योजनाओं की जानकारी
जन-जन तक पहुँचाना
मानव जीवन विकास समिति, कटनी

श्रम शक्ति अभियान
जल सम्मेलन
श्रम शक्ति अभियान

National Level Workshop on FRA& Livelihood in the Context Of Bundelkhand
Date - 23 January 2021
Place-Gandhi Bhawan Bhopal
BRLF

BRLF
जनसुनवाई

District Level Consultations For Convergence

Celebrating 20 years

Celebrating 20 years

मीडिया कवरेज

शासकीय योजनाओं की जानकारी के लिए पंचायतों में सूचना केंद्र

पंचायतों में रखे जा रहे हैं प्रवासी मजदूर रजिस्टर

डिण्डौरी ■ राज न्यूज नेटवर्क

मानव जीवन विकास समिति संस्था द्वारा जिला डिंडौरी जिले के डिण्डौरी और समनापुर विकासखंडों में चयनित गांवों में कोरोना महामारी के दौरान चलाए जा रहे जागरूकता कार्यक्रम एवं सरकारी योजनाओं से गरीबों को जोड़ने का कार्य किया जा रहा है।

इस सिलसिले में संस्था ने 8 पंचायतों में पलकी, रकारिया, सिमरिया मॉल, कोंका (डाडबिछिया) , मोहती, घाटा, केवलारी, जाड़ासुरंग में सूचना केन्द्र बनाया है, जहां से ग्रामीण विभिन्न शासकीय योजनाओं की जानकारी ले सकते हैं। इसके साथ ही संस्था ने एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए पंचायत विभाग की सहमति से इन पंचायतों में प्रवासी मजदूर रजिस्टर भी रखवाया है, जहां गांव से प्रवास पर जाने वाले मजदूरों के बारे में विवरण को दर्ज किया जाएगा।

संस्था के राम किशोर चौधरी ने बताया कि जिले के 5 विकासखंडों में लॉकडाउन के समय से ही कोविड-19 से जागरूकता करने और गरीबों को शासकीय योजनाओं से जोड़ने का कार्य किया जा रहा है। यह कार्यक्रम यूएनडीपी एवं पार्टनरिंग फिल्म फाउण्डेशन, भोपाल के सहयोग से चलाया जा रहा है। संस्था द्वारा अब तक 25 हजार से %यादा लोगों को कोविड-19 से जागरूक करने के साथ-साथ उन्हें शासकीय योजनाओं का लाभ लेने के बारे में बताया गया है। संस्था द्वारा दी गई जानकारी से 20580 पात्र लोगों ने विभिन्न

शासकीय योजनाओं का लाभ उठाया और अभी फरवरी व मार्च महीने मे 2 विकासखंड डिण्डौरी और समनापुर से 800 परिवार को विभिन्न सरकारी योजनाओं से जोड़ा गया है। राम किशोर चौधरी ने बताया कि काम के दौरान हुए अनुभवों को विभिन्न शासकीय विभागों के अधिकारियों के साथ साझा भी किया गया है, ताकि गरीबों को सामाजिक सुरक्षा के दायरे में बेहतर तरीके से लाया जा सके। इसी कड़ी में प्रवासी मजदूर रजिस्टर को रखवाया गया है, ताकि इसमें दर्ज जानकारी के आधार पर मजदूरों को जोखिम से बचाया जा सके और जरूरत पड़ने पर उन्हें तत्काल मदद पहुंचाई जा सके। इस रजिस्टर की जानकारी के आधार पर विश्लेषण कर प्रवास को कम करके स्थानीय स्तर पर रोजगार एवं राहत देने की योजना बनाई जा सकती है। मार्च में महिला दिवस के अवसर पर आयोजित विशेष ग्राम सभा के माध्यम से महिलाओं को सम्मान करने और प्राथमिकता के आधार पर उन्हें मनरेगा सहित शासकीय योजनाओं से जोड़ने का काम किया गया।

Celebrating 20 years

हरिभूमि
जबलपुर - कटनी भूमि
4 July 2020

वन व राजस्व विभाग के बीच पिस रहे मजदूर किसान

बनवार। मानव जीवन विकास समिति भारत रूरल लाइवलीहुड फ उंडेशन भारत सरकार के सहयोग से ब्लॉक जबेरा की सिंग्रामपुर, चौरई, कलूमर, सगरा, रीछई के ग्रामो में कोरोना महामारी एवं सरकार द्वारा संचालित योजनाओं की जानकारी जन जागरुकता अभियान के मध्य से जन जन तक पहुँचाने का प्रयास किया जा रहा है। वन अधिकार कानून, महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना किसान सम्मान योजनाओं के संबंध में विमला नामदेव ने बताया कि सरकार अनेक योजनाएं संचालित कर रही है। ग्राम पंचायतों के माध्यम से लेकिन लोगो तक जानकारी नहीं पहुंच रही है। जैसे वन भूमि पहाड चट्टान जो वन विभाग की भूमि है लेकिन राजस्व विभाग अपनी बता कर लोगों का जुर्माना कर रहे हैं जबकि वन विभाग की वन भूमि का जुर्माना (अर्थदण्ड) वन विभाग लेगा और राजस्व विभाग की राजस्व भूमि का जुर्माना (अर्थदंड) राजस्व विभाग लेगा लेकिन दोनों विभागों के बीच मजदूर किसान पिस रहे हैं,जो नियम विरूद्ध है।

किसानों को बताए जा रहे आधुनिक खेती के तरीके

तेंदूखेड़ा। मानव जीवन विकास समिति के द्वारा जनपद की कई ग्राम पंचायतों में किसानों को आधुनिक खेती के तरीके बताए जा रहे हैं। जिससे ग्रामीण क्षेत्रों के लोग अपनी आजीविका चला सकें। ग्राम पंचायत सेहरी आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र है जो कल तक विकास की मुख्य धारा से हटकर था। यहां के लोग अपनी जीविकोपार्जन के लिए पूरी तरह से वनों पर निर्भर थे। अब यही लोग वन भूमि हक प्रमाण पत्र पाकर कृषि आधारित

समूह की महिलाओं ने बनाई जैविक खाद

तेंदूखेड़ा। नईदुनिया न्यूज़

ब्लाक के सेहरी गांव की एक स्वसहायता समूह की महिलाओ ने जैविक खाद्य और गौमूत्र से खेती के लिए जैविक दवाई तैयार की है। यह कार्य उन्होंने मानव जीवन विकास समिति के सहयोग से किया है। अब इसी खाद और रासायनिक दवाई से वह अपनी बंजर भूमि को हरा भरा करेंगी। जिस कीटनाशक दवाई को महिलाओं ने तैयार किया है उसकी जानकारी मानव विकास समिति के माध्यम से मिली है। महिलाओं ने जैविक खाद तैयार करने और कीटनाशक दवाई बनाने के लिये

ली है। यूरिया और डीएपी की जगह गोबर की खाद के साथ गौमूत्र से तैयार दवाई को ही अपने खेतों में छिड़काव करेंगी।

घनश्याम रैकवार ने बताया कि दमोह मानव जीवन विकास समिति भारत रूरल लाइवलीहुड फाउंडेशन के सहयोग से आजीविका खड़ी करने के लिए ग्राम सेहरी की स्व सहायता समूह महिलाओं ने गौमूत्र से जैविक खाद, दवाइयों के साथ गोमूत्र की बिक्री भी करेंगी जिससे आय बढ़े और आर्थिक स्थिति मजबूत हो। बैठक में चंदाबाई, शांति बाई, उमारानी, अर्चना, शोभा रानी, लक्ष्मी रानी, सीमा रानी, राधाबाई, अंजनी, दसोदा,

मानव जीवन विकास समिति ने वितरित किया खाद्यान

तेंदूखेड़ा। खाद्यान देते मानव जीवन विकास समिति के सदस्य।

तेंदूखेड़ा(नईदुनिया न्यूज)। कोरोना समन्वयक घनश्याम रैकवार ने बताया कि

घुमंतु जाति की देख-रेख में जुटी मानव जीवन विकास समिति

कटनी, देशबन्धु। मानव जीवन विकास समिति, एकता परिषद द्वारा 8 अप्रैल 2020 को मझगवां को बिहार (पटना) से 8 परिवार के 40 लोग लॉकडाउन के कारण कोरेनटाईन मे रुके हुये है। प्रति परिवार को 25 किलो आटा व 5 किलो चावल के हिसाब से 2 क्विंटल आटा और 40 किलो चावल का वितरण किया गया। ये परिवार घुमंतु जाति के है जो रोजीरोटी के चक्कर मे गांव गांव घूमकर अपना जीवन यापन कर रहे है। ये परिवार को समिति लगातार निगरानी मे रखकर मदद कर रही है। मानव जीवन विकास समिति सचिव निर्भय सिंह के मार्गदर्शन मे समिति कार्यकर्ता दयाशंकर यादव, अभय कुमार, रामकिशोर, ज्ञानप्रकाश उपाध्याय, रवि पाण्डेय की इस काम महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

शुक्रवार 3 अप्रैल 2020 (9)

जरूरतमंदों को नि:शुल्क बांटे गये मास्क व एक टाईम का भोजन

कटनी/ब्यूरो।

स्वयंसेवी संस्था मानव जीवन विकास समिति के सचिव निर्भय सिंह के प्रयास से जरूरतमंदों को नि:शुल्क बांटे गये मास्क व एक टाईम का भोजन। जिसे देख राहगीरों ने इस काम को सराहा। सबसे प्रथम बड़वारा सामुदायिक स्वास्थ केंद्र पहुंचकर इस काम मे सहयोग करने वालों की कोरोना संबंधित जांच कराई गई और स्वस्थ होने का प्रमाण साथ रखा।

स्वास्थ केंद्र मे भी संस्था द्वारा बने मास्क डॉक्टर व टीम को प्रदाय किया गया साथ ही वहां पर बिना मास्क के आये 10 लोगों को मास्क भी दिया गया। और 20 मास्क डॉक्टर को दिये गये जिससे आने वाले मरीजों को मास्क दिया जायेगा। तत्पश्चात थाना बड़वारा मे भी पहुंचकर थाने टीम से मिला गया उन्हें भी संस्था के बारे मे बताया गया की हम अपने खर्चे से जरूरतमंदों को मास्क व एक टाईम का भोजन उपलब्ध कराने प्रयास कर रहे हैए इसी तारतम्य मे थाने टीम को भी मास्क पहनाया गया और बताया गया की यह काम हम लगातार लॉकडाउन खुलने तक करेंगे।

इस काम हेतु सामग्री लाने ले जाने हेतु एक पिकअप गाड़ी का परमिट भी थाने से दिया गया जिससे संस्था अपने काम को सहजता से कर सके। यह की संस्था द्वारा अभी तक लगभग 1600 मास्क जरूरतमंदों को बांटे गये। इस काम मे सहयोग कर रहे दयाशंकर यादव व टीम के साथी।

रोजगार से जोड़ने ग्रामीणों को दी गई निशुल्क बकरियां

तेंदूखेड़ा। मानव जीवन विकास समिति द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में काफी अच्छे कार्य कि ए जा रहे हैं। लॉकडाउन के समय उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों में निशुल्क भोजन व अन्य सामग्री का वितरण किया इसके बाद कि सानों के लिए निशुल्क बीज दिए और अब ग्रामीणों को निशुल्क बकरियां दी गई हैं। यह वितरण मंगलवार को मानव जीवन विकास समिति के संचालकों के सहयोग से हुआ है। जानकारी देते हुए मानव जीवन विकास समिति के ब्लॉक समन्वयक घनश्याम रैकवार ने ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर 13 परिवारों को बकरियां दी हैं। इसके पूर्व उन्होंने पशु चिकित्सा विभाग के माध्यम से मुर्गी का वितरण किया था और अब मंगलवार को उन्होंने बकरियों का वितरण किया। 13 परिवारों को दो-दो बकरियां दी गई। क्योंकि बकरी ग्रामीण क्षेत्रों में आसानी से बढ़ सकती हैं और उनका भरण पोषण भी कम खर्चे

बकरियां लेकर खुशी मनाते ग्रामीण।

में हो जाता है। श्री रैकवार ने बताया कि मानव जीवन विकास सामिति के निर्भय सिंह के सहयोग और परियोजना समन्वय चंद्रपाल कुशवाहा के मार्गदर्शन में 26 बकरियों का वितरण किया गया। जिन लोगों को बकरी दी गई है उनमें अंधोबाई गौंड फुलर, जुगराज गौंड फुलर, बड्डाई सेहरी, गुड्डू गौंड सेहरी, खुब्बनसिंह सेहरी, अनीता बाई बगदरी, रुक्मनबाई बगदरी, ताराराानी बगदरी, प्रेमसिंह गौंड पटेरियामाल, रामरानी पटेरियामाल आदि को बकरियां दी गई।

मानव जीवन विकास समिति कर रही ग्रामीणों की मदद

तेंदूखेड़ा(नईदुनिया न्यूज)। मानव जीवन विकास समिति के द्वारा लगातार क्षेत्र के किसानों की मदद की जा रही है। लॉकडाउन में क्षेत्र के किसान परेशान थे उस समय निर्भय सिंह के मार्गदर्शन में कोरोना महामारी से प्रभावित लोगों की मदद की थी। लॉकडाउन में कि सानों के पास जो खेती के लिए बीज रखा था उसको खर्च कर लिया गया जिसके बाद इनके पास बोवनी के लिए भी बीज नहीं बचा था।

अभी खेती का समय है मानसून की शुरूआत हो गई है और किसान खेती के लिए तैयारियां शुरू कर रहा है, लेकिन जो लघु व सीमांत किसान हैं उन्हें खेती करने में समस्याएं आ रही है क्योंकि उनके

अंतराष्ट्रीय महिला दिवस ग्राम तिपनी में मनाया गया

लोकोत्तर समाचार सेवा ■ दमोह
www.elokottar.in

मानव जीवन विकास समिति कटनी भारत रूरल लाइवली हुड फाउंडेशन दिल्ली द्वारा जिला दमोह के ब्लाक तेदूखेडा के ग्राम तिपनी में अंतराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया कार्यक्रम का उद्देश्य महिला अधिकारों के संबंध में विस्तार से जानकारी देते हुए श्री मति बिमला बहिन ने कहा कि पुरूष सत्ता के चलते महिलाओं को पैत्रिक सम्पति में महिलाओं को अधिकार नहीं दिये जाते थे जबकि पुत्र के लिए चल अचल संपत्ति का

हूँ न दासी हूँ, मै तो तेरी साथी हूँ फिर

रायकवार नोहटा ने कहा कि

संकट से मुक्ति का प्रयास ● जामुन गांव में किया गया तालाब का गहरीकरण

तेंदूखेड़ा (नईदुनिया न्यूज)। एकता परिषद की श्रम शक्ति यात्रा जिले के तेंदूखेड़ा ब्लाक पहुंची जहां ग्रामीणों ने यात्रा का स्वागत किया। तेंदूखेड़ा की ग्राम पंचायत जामुन, ससनाखुर्द, बमनोदा गांव में श्रम यात्रा पहुंची यहां एकता परिषद की एक इकाई मानव जीवन विकास समिति पहले से ही ब्लाक के कई गांव में काम कर रही है। श्रम शक्ति यात्रा 27 फरवरी को सिवनी जिले के मोहगांव से शुरू होकर दमोह जिले के तेंदूखेड़ा ब्लाक के गांव में पहुंची थी।

तेंदूखेड़ा। ग्रामीणों के साथ मौजूद एकता परिषद के पदाधिकारी। ● **नईदुनिया**

जिसमें एकता परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष रनसिंह परमार, परिषद केराष्ट्रीय महासचिव अनीश भाई, राज्य संयोजक डोंगर शर्मा, श्रम शक्ति अभियान के संयोजक संतोष सिंह, राष्ट्रीय सदस्य निर्भय सिंह शामिल हैं। पदाधिकारियों ने जामुन गांव के लोगों से कहा कि आपके गांव में पानी की कमी थी, लेकिन गांव के 100 परिवारों ने तालाब गहरी करण किया और जल संरक्षण के लिए कई दिनों तक काम करके एक बडे तालाब को गहरा कर इतिहास रच दिया। एकता परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष रनसिंह ने कहा तालाब का एतिहासिक काम हुआ है आने वाली पीढ़ियां इस पवित्र काम को याद रखेंगी।

जिस दिन पानी भरेगा उस दिन सूखे खेतों में भी हरियाली दिखेगी और हमारे विकास का अध्याय शुरु हेगा। ग्रामीणों ने एकता परिषद और मानव जीवन विकास समिति के सदस्यों का आभार व्यक्त भी किया जिनके सहयोग से जामुन गांव में तालाब का गहरीकरण हुआ है। उन्होंने बताया कि एकता परिषद के संस्थापक राजगोपाल पीव्ही ने इसकी परिकल्पना कर श्रम आधारित समाज के महत्व को आगे बढ़ाने की शुरुआत कर वंचितों के भूमि अधिकार को रचनात्मक कार्य से आजीविका खड़ी करने का प्रयास कर रहे हैं। इस दौरान अनीश भाई, निर्भय सिंह, डोंगर शर्मा भी मौजूद रहे। श्रम यात्रा के संबंध में मानव जीवन विकास समिति के समन्वयक घनश्याम रैकवार ने बताया कि बैठक में संतोष सिंह, घनश्याम भाई, चंद्रपाल, नरेश, संतोष भारती व सैकड़ों मुखिया साथियों ने भाग लिया सभी ने काम की सराहना करते हुए बधाई दी।

जल जंगल जमीन के विकास में गांव- गांव तक सैकड़ों तालाब, कुआं, नाला बंधान, सिंचाई वाली नाली निर्माण, बावड़ी की सफाई का काम पहले चरण में किया जा रहा है। अभियान को सतत संचालित रखने केलिए अगली कार्यनीति व्यापक स्तर पर जन संवाद कर जिला व राज्य स्तरीय कार्यक्रम आयोजित कर कि या जाना प्रस्तावित है।

मानव जीवन विकास समिति उपलब्ध करा रही बीज

तेंदूखेड़ा (नईदुनिया प्रतिनिधि)। मानव जीवन विकास समिति कटनी भारत रूरल लाइवलीहुड फाउंडेशन दिल्ली के सहयोग से सीमांत, लघु कि सानों के लिए बीज उपलब्ध कराया जा रहा है। समिति सचिव निर्भय सिंह, परियोजना समण्वयक चंद्रपाल कुशवाहा

सान सभी संसाधन लगाने पर हमारे देश की 50 प्रतिशत खेती वर्षा आधारित रहेगी। हमारी जल उपयोग क्षमता सिर्फ 40 प्रतिशत और 30 प्रतिशत वर्षा जल का संरक्षण कर पा रहे हैं। तापमान वृद्धि के कारण जलवायु परिवर्तन हो रहा है इस कारण औसत वर्षा व वर्षा के

सबको सन्मति दे भगवान कार्यक्रम का आयोजन

तेंदूखेड़ा(नईदुनिया न्यूज)। शुक्रवार को ग्राम बमनोदा में आचार्य विनोबा भावे की 150वीं जयंती पर मानव जीवन विकास समिति कटनी, भारत रुरल लाइवलीहुड फाउंडेशन भारत सरकार दिल्ली के सहयोग से करुणा संवाद व सबको सन्मति दे भगवान कार्यक्रम के तहत ग्राम पंचायत बमनोदा के खदरीहार में सुनवाई कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसका मुख्य उद्देश्य अनुसूचित जनजाति और अन्य परंपरागत वनवासी, वन अधिकारों की मान्यता अधिनियम के अनुसार एमपी वन मित्र पोर्टल पर अपलोड किए गए वन भूमि अमान्य दावा फार्म आदि के बारे में जानकारी देना था।

तेंदूखेड़ा। आचार्य विनोबा भावे की 150वीं जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित ग्रामीण। ● **नईदुनिया**

इस संबंध में परियोजना समन्वयक चंद्रपाल कुशवाहा ने भूदान अभियान के नायक आचार्य विनोबा भावे के जीवन, आदर्श के बारे में बताया। इसके साथ ही आजीविका के मुद्दे पर विचार विमर्श किया गया। घनश्याम प्रसाद रैकवार ने लोगों को बताया कि वनवासी आदिवासियों की आजीविका व रहना जंगल में होता है। वनवासी आदिवासी जंगल में खेती के अलावा महुआ, हर्र, बहेड़ा, आंवला, बेल, तेंदूपत्ता की रखवाली कर अपनी आजीविका चलाते हैं।

कार्यक्रम में चंदना, पलवा, हर्रई, जैतगढ़, कोसमदा, कोटखेड़ा, रिचकुड़ी, पटेरियामाल, सर्रा, माधो, सरसैलामाल, बोरिया, झलौन, बगदरी, धनगौर, जामुन, हनुमतबागो, बेवरीनिजाम, अजीतपुर, दलपतपुर, कुदपुरा, सेहरी, औरियामाल, बिस्नाखेड़ी, ससनाखुर्द, भैंसा आदि गांव के ग्रामीणों ने भाग लिया।

किसानों को मछली के बीज का किया वितरण

बनवार। मानव जीवन विकास समिति कटनी भारत रूरल लाइवलीहुड ... को आजीविका से जोड़ा जाए। क्योंकि गांव में कृषि आधारित गैर कृषि आधारित

बामनदेही में किया बोरी बंधान

तेंदूखेड़ा। नदी पर बोरी बंधान कार्य करते ग्रामीण। ● **नईदुनिया**

तेंदूखेड़ा (नईदुनिया प्रतिनिधि)। कलेक्टर के निर्देश पर जिले की सभी नदियों पर बने डेम के गेट लगाए जा रहे हैं और बोरी बंधान कर पानी रोकने का प्रयास किया जा रहा है। इसी के चलते सर्रा गांव से निकली बामनदेही नदी में गुरुवार को मानव विकास समिति कटनी के द्वारा सर्रा ग्राम पंचायत अंतर्गत आने वाले बांदा गांव में नदी पर बोरी बंधान का कार्य किया गया। बोरी बंधान होने के बाद नदी के बहने वाले पानी पर रोक लग गई है। मानव जीवन विकास समिति कटनी के जिला समन्वयक घनस्याम रैकवार द्वारा बताया गया कि ग्रामीण क्षेत्र में नदियों में स्टॉप डैम नहीं है जिसके कारण नदी में भरा बारिश का पानी बह जाता है। ऐसा ही आलम बामनदेही नदी में देखने मिला जिसके बाद ग्रामीणों की मदद लेकर नदी पर बोरी बंधान का कार्य किया गया अब किसानों को सिचाई के लिए पर्याप्त पानी मिलेगा।

जनभागीदारी से ग्रामीणों को मिल रहा है रोजगार

तेंदूखेड़ा (नईदुनिया प्रतिनिधि)। मानव जीवन विकास समिति तेंदूखेड़ा और एकता परिषद के द्वारा जनभागीदारी से ग्रामीण क्षेत्रों में कार्य कराए जा रहे हैं। जिससे मजदूरो को रोजगार मिल रहा है जिससे उनकी आजीविका अच्छे से चल रही है। राष्ट्रीय एकता परिषद व एकता परिषद राज्य इकाई ने ग्राम ससनाखुर्द में शनिवार को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की पुण्य तिथि मनाई।

एकता परिषद के राष्ट्रीय महासचिव अनीश कुमार ने कहा कि गांधी जी ऐसा व्यक्तित्व थे जिन्होंने पूरे देश को आजाद कराने के लिए निरंतर संघर्ष किया। एकता परिषद के राष्ट्रीय सदस्य निर्भय सिंह ने कहा कि गांधी जी के अहिंसात्मक संघर्षों और विचारों को लेकर चलने से ही हमारे देश का विकास संभव है। श्रम शक्ति अभियान प्रभारी संतोष सिंह

तेंदूखेड़ा। तालाब गहरीकरण का कार्य करते मजदूर। ● **नईदुनिया**

दमोह

अनदेखी• अधिकारियों ने दिया था गांव में जलसंकट की समस्या हल करने का आश्वासन

किसी ने ध्यान नहीं दिया तो आदिवासियों ने प्यास बुझाने के लिए छेड़ दी तालाब खोदने की मुहिम

100 महिला, पुरुष और बच्चों ने किया गहरीकरण

भास्कर संवाददाता | दमोह/ तेंदूखेड़ा

दमोह | तेंदूखेड़ा ब्लाक के जामुन में आदिवासियों ने जलसंकट से निपटने के लिए तालाब का गहरीकरण करने की पहल की है।

दमोह। जिला मुख्यालय से 100 किमी दूरी तेंदूखेड़ा ब्लाक के ग्राम जामुन में गंभीर जलसंकट के बीच शासन की अनदेखी को देखते हुए आदिवासियों ने अपनी प्यास बुझाने स्वयं तालाब खोदने में जुट गए हैं। पिछले एक माह से 100 से ज्यादा आदिवासी महिला, पुरुष और बच्चे तालाब को खोदने में लगे हैं। उनकी मेहनत भी रंग ला रही है। तालाब में अच्छा खासा पानी निकल आया है और आसपास पानी का स्टॉक किया जा सके, इसके लिए ग्रामीण आदिवासी तालाब की बांध मजबूत करने में लगे हैं।

ग्राम के सरपंच डेलन सिंह ने बताया कि जामुन में पहले अंग्रेजों के समय में एक चौपरा बना हुआ था। जिसमें दो से ढ़ाई फिट की गहराई में पानी था, बस्ती से करीब आधा किमी दूर अकेले इस चौपरा में ही मिल सके। इसलिए आदिवासी एकता परिषद के बैनर तले श्रमदान करके तालाब बनाने में जुटे हैं। यह तालाब करीब 150 मीटर लंबा और चौड़ा है। सरपंच ने बताया कि जलसंकट से निपटने के लिए ग्रामीणों ने मिलकर यहां पर सामूहिक प्रयास करके बड़ा तालाब बनाने का निर्णय लिया और के मुताबिक अभी एक किमी दूर से पानी लाया जा रहा है।

गांव में जामुन और पिंडरई के बीच एक कुआं है, जिसमें थोड़ा पानी है और इस पानी से ही ग्रामीण अपनी प्यास बुझा रहे हैं। यहां बता दें कि जामुन में दो से तीन फीट पत्थर की खुदाई करने के बाद पानी निकल

आदिवासी नेता तखत सिंह आदिवासी ने बताया कि जामुन में कई सालों से जलसंकट है, यहां पर जबेरा विधायक धर्मेंद्र लोधी और जिला पंचायत सीईओ भी आ चुके हैं, सभी ने अपनी-अपनी बात रखी और मदद का आश्वासन दिया, लेकिन जब कोई सामने नहीं आया तो उन्होंने स्वयं

बमनोदा में जन समस्या निवारण शिविर में 232 आवेदन आए

भास्कर संवाददाता | तेंदूखेड़ा

आचार्य विनोबा भावे की 150 वी जयंती पर मानव जीवन विकास समिति कटनी व भारत रूलर लाइवलीहुड फाउंडेशन भारत सरकार दिल्ली के सहयोग से करूणा संवाद एवं सबको सम्मति दे भगवान कार्यक्रम का आयोजन ग्राम बमनोदा में किया गया। खदरीहार में एक दिवसीय जन समस्या का कार्यक्रम में अनुसूचित जनजाति और अन्य परम्परागत वन निवासी वन अधिकारों की मान्यता अधिनियम के तहत एमपी वन मित्र पोर्टल पर अपलोड किए गए वन भूमि अमान्य दावा फार्म व्यक्तिगत सामुदायिक के लाभार्थियों के लिए दिशा निर्देशों के अनुसार उचित कार्यवाही कही गई। परियोजना समन्वयक चन्द्रपाल कुशवाहा ने भूदान अभियान के नायक आचार्य विनोबा भावे जी के जीवन, आदर्श भू अभियानों की वंचितों तक पहुंचाया। घनश्याम प्रसाद रायकवार ने बताया कि वन में निवास करने वालो वनवासी आदिवासियों की आजीविका एवं सामुदायिक निस्तार अधिकतर जंगलों से चलते हैं, इसलिए सामुदायिक निस्तार अधिकार की भी आवश्यकता है। वनवासी आदिवासी जंगल में खेती के अलावा महुआ, हर्र, बहेरा, आंवला, बेल, तेंदूपत्ता से आजीविका चलाता है, वनवासी को जंगल जमीन का कानूनी लेने का अधिकार है। कार्यक्रम के दौरान कब्जा सत्यापन और वन भूमि दावा फार्म अपलोड अमान्य होने

ग्रामीणों ने की वनभूमि से अतिक्रमण हटाने की मांग

तेंदूखेड़ा वन परिक्षेत्र की केवलारी बीट में करीब 400 हेक्टेयर वनभूमि पर अतिक्रमण, ग्रामीणों ने सौंपा ज्ञापन

तेंदूखेड़ा। तहसीलदार को ज्ञापन सौंपते ग्रामीण। ● **नईदुनिया**

तेंदूखेड़ा (नईदुनिया न्यूज)। जिले के तेंदूखेड़ा वन परिक्षेत्र की केवलारी बीट में करीब 400 हेक्टेयर वनभूमि पर अतिक्रमण किया गया है। इस खबर को नईदुनिया ने बुधवार को प्रमुखता से प्रकाशित किया था। इसके बाद गुरुवार को सैकड़ों की संख्या में ग्रामीण तहसीलदार मोनिका बाघमारे को अतिक्रमण हटाने की मांग को लेकर ज्ञापन सौंपने पहुंचे। साथ ही तेंदूखेड़ा उपवनमंडल अधिकारी अमित चौहान को भी ज्ञापन सौंपा।

संतोष भोजराज ने बताया कि खमरिया, अजीतपुर और कच्चाऊ में रहने वाले 90 प्रतिशत लोगों के पास मवेशी हैं जो नियमित चरने के लिये जंगल जाते हैं, लेकिन लालपानी तालाब के पास वनभूमि पर दबंगों ने अतिक्रमण किया है जिससे मवेशी जंगल नहीं जा पा रहे इसलिए वहां का अतिक्रमण हटाया जाए। आशीष पाल और देवीसिंह ने बताया कि तेजगढ़ रेंज की खमखेड़ा बीट में दलपतखेड़ा के पास से जंगल की जगह है। वहां पर कब्जा होने से मवेशी दलदल से गुजरते हैं जिसके कारण कई मवेशी दलदल में आज भी फंसे हैं और कई घायल हो चुके हैं। ग्रामीणों ने कई बार बीटगार्ड और सर्किल आफिसर से दलपतखेड़ा का अतिक्रमण हटाने के लिये कहा, लेकिन आज तक कोई निराकरण नहीं हुआ।

खमरिया निवासी राजकुमार यादव ने बताया कि अजीतपुर से लगी हुई वनभूमि पर दलपतखेड़ा के कई लोगों ने हरे, भरे पेड़ों को काटकर अवैध रूप से समतल जगह बनाया है और उस पर खेती शुरू कर दी है। इसके कारण खमरिया, अजीतपुर गांव के लोगों के मवेशी जंगल नहीं जा पा रहे। नीलेश यादव ने बताया कि दलपतखेड़ा तेजगढ़ वनपरिक्षेत्र की खमखेड़ा बीट में आता है और यहां जो वनभूमि पर अतिक्रमण हुआ है उसमें बीटगार्ड और सर्किल ऑफिसर की सांठगांठ है।

Celebrating 20 years

समिति के पदाधिकारी

श्री बद्री नारायण नरडिया
अध्यक्ष

श्री धर्मदास सिंह
उपाध्यक्ष

श्री निर्भय सिंह
सचिव

श्री संतोष सिंह
सह-सचिव

श्री अनीश कुमार
कोषाध्यक्ष

श्रीमति सुशीला दीक्षित
सदस्य

सुश्री शोभा तिवारी
सदस्य

Celebrating 20 years

टीम मेम्बर्स

अभय पटेल
(वित्तीय प्रबंधक)

रामकिशोर चौधरी
(परियोजना प्रबंधक

चन्द्रपाल कुशवाहा
(परियोजना प्रबंधक)

तरुनेश कर्पूर
(कार्यालय सहायक)

घनश्याम रैकवार
(ब्लॉक समन्वयक)

नरेश खटीक
(ब्लॉक समन्वयक)

दयाशंकर यादव
(प्रशिक्षण केन्द्र प्रबंधक)

मूलचंद केवट
(रसोईया)

Celebrating 20 years

धन्यवाद !